कठपुतला

कार्लो कालोदी का प्रसिद्ध उपन्यास 'पिनोकियो'

कठपुतला

कठपुतला

एक समय की बात है, एक था...

'राजा!' तुम फौरन कहोगे। लेकिन नहीं बच्चो! कहानी यों है—एक समय की बात है, एक था लकड़ी का टुकड़ा! बहुत मामूली-सी लकड़ी का टुकड़ा था वह। जैसे जलाने की लकड़ी समझ लो।

लकड़ी का यह टुकड़ा एक दिन अन्तोनियो नाम के एक बूढ़े बढ़ई की दूकान में पड़ा था। जैसे ही बढ़ई की नज़र इस टुकड़े पर पड़ी, उसका झुर्रियों-भरा चेहरा खुशी से चमक उठा। वह हाथ मलते हुए बोला, ''वाह, मैं बेकार ही परेशान था, इस लकड़ी से उस छोटी टेबल की एक टाँग बड़े मज़े में बन सकती है।''

उसने फौरन लकड़ी को छीलने के लिए अपना बसूला निकाला। जैसे ही वह बसूला चलाने लगा कि उसका हाथ रुक गया। एक पतली-सी आवाज़ में कोई कह रहा था, ''हाय, इतनी ज़ोर से नहीं।''

बढ़ई ने चौंककर इधर-उधर देखा। कहीं कोई नहीं। दूकान खाली थी। बस, वह था और उसके औज़ार थे, लड़की की दो-चार चीज़ें थीं। फिर आवाज़ कहाँ से आई? हो सकता है, यों ही उसने कुछ सोच लिया हो। उसने लकड़ी छीलने के लिए कसकर बसूला मारा और फिर वही आवाज़ रोते हुए स्वर में बोली, ''ओह! मुझे बहुत चोट लग रही है।''

इस बार बढ़ई अचम्भे में पड़ गया। आखिर यह कौन है? किसी बच्चे की आवाज़ मालूम पड़ती है। लेकिन यहाँ आस-पास तो कोई है ही नहीं। वह चिढ़कर जल्दी-जल्दी बसूला चलाता रहा। एक-दो बार फिर आवाज़ आई, लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया। लकड़ी का कुछ हिस्सा छीलकर वह उसे चिकना करने के लिए बलुए कागज़ से रगड़ने लगा। इतने में फिर वही आवाज़ कुछ हँसते हुए बोली, ''ही-ही-ही, ज़रा जल्दी करो। मुझे बड़ी गुदगुदी हो रही है।''

बढ़ई ने लकड़ी का टुकड़ा फौरन दूर फेंक दिया और वह खड़ा हो गया। यह आवाज़ तो शायद उस लकड़ी के टुकड़े में से ही आ रही थी। वह पसीने-पसीने हो गया। अब भी उसे ठीक से विश्वास नहीं हो रहा था कि यह आवाज़ लकड़ी के टुकड़े में से ही आ रही है या कहीं और से! इतने में बाहर किसी ने दरवाज़ा थपथपाया। बढ़ई ने कहा, ''आ जाओ, कौन है?''

तुरन्त एक हँसमुख आदमी उछलकर दूकान पर चढ़ आया। इस आदमी का नाम जेपेत्तो था। लेकिन मुहल्ले के लड़के इसे 'पोलेन्दिना' कहकर चिढ़ाया करते थे, जिसका मतलब होता है—हलुवा। आते ही उसने बढ़ई को सलाम किया और बोला, ''बढ़ई चाचा, आज मुझे एक बात सूझी है।''

''बोलो, क्या है?''

''मैंने सोचा है कि मैं लकड़ी का एक खूबसूरत पुतला बनाऊँ। ऐसा कठपुतला, जो तरह-तरह के खेल दिखाए, नाचे, गाए, धूम मचाए। इस पुतले को लेकर मैं दुनिया भर में घूमूँगा, खेल दिखाऊँगा और रोटी कमाऊँगा। कहो, ठीक है न?''

''और क्या, शाबाश, पोलेन्दिना।'' उस लकड़ी के टुकड़े की तरफ से पतली-सी आवाज़ आई।

जेपेत्तो ने जब यह सुना तो नाराज़ हो गया। उसे सवेरे ही सवेरे

पोलेन्दिना कहकर चिढ़ाया गया! वह बढ़ई को डाट कर बोला, ''तुम मुझे चिढ़ा क्यों रहे हो? तुम मुझे पोलेन्दिना कहते हो!''

''नहीं, मैंने नहीं कहा।'' बढ़ई बोला।

''तुमने नहीं कहा, तो क्या मैंने कहा? तुम्हींने मुझे चिढ़ाया!''

और इस तरह दोनों झगड़ पड़े। काफी देर तक झगड़ने के बाद जब किसी तरह दोनों ठण्डे हुए, तो जेपेत्तो को मनाने के लिए बढ़ई

बोला, ''हाँ, तो तुम कठपुतला बनाना चाहते हो? ठीक है, लेकिन यह तो बताओ कि तुम मेरे पास क्यों आए थे?''

''बढ़ई चाचा, बात असल में यह है कि कठपुतला बनाने के लिए मुझे थोड़ी-सी लकड़ी चाहिए। तुम्हारे पास कोई फालतू लकड़ी है?''

''हाँ, हाँ, यह लो!'' बढ़ई ने खुशी से कहा और लकड़ी का वही टुकड़ा उठा लाया जिसे उसने डरकर दूर फेंक दिया था। लेकिन इतने में एक अजीब बात हो गई। लकड़ी का टुकड़ा उसके हाथ की पकड़ से छूटकर जेपेत्तो की टाँगों से जा टकराया। जेपेत्तो चीखा, ''अरे चाचा, यह क्या करते हो? मेरा पैर ही तोड़ा होता तुमने!''

''नहीं तो, मैंने तो कुछ नहीं किया।'' बढ़ई बोला।

''कहते हो, कुछ नहीं किया। तुमने इतने ज़ोर से लकड़ी फेंकी कि मैं तो अभी लंगड़ा ही हो जाता!''

''नहीं, लकड़ी मैंने फेंकी नहीं, वह तो अपने-आप आ गिरी। इसमें मेरा क्या कुसूर!''

''तुम झूठ बोलते हो!''

''तुम हो झूठे, जाओ यहाँ से!''

और जेपेत्तो बड़बड़ाता हुआ लकड़ी लेकर अपने घर लौट आया।

2

जेपेत्तो एक ऐसे कमरे में रहता था, जो मकान के निचले हिस्से में तहख़ानेनुमा था, अँधेरा-अँधेरा-सा, जिसमें रोशनी सिर्फ सीढ़ियों से होकर आती थी। कमरे में सामान के नाम पर एक टूटी खाट, सड़ी-सी

कुर्सी और हिलते हुए पायोंवाली एक मेज़ थी। एक कोने में अंगीठी में आँच जल रही थी। लेकिन यह आँच सचमुच की नहीं थी, बल्कि यह एक तस्वीर थी।

घर पहुँचकर जेपेत्तो अपने औज़ार लेकर काम करने बैठा। वह एक पुतला बनाना चाहता था। वह सोच रहा था कि इस पुतले का नाम 'पिनोकियो' रखूँगा। यह एक बहुत धनी आदमी का नाम है। यह कठपुतला भी मुझे धन दिलाएगा।

पहले उसने पुतले के बाल बनाए। फिर माथा बनाया और तब आँखें बनाईं। आँखें बनाते-बनाते उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसकी पुतलियाँ इस तरह घूमती थीं जैसे सच्ची हों। इस समय वे आँखें उसे ही एकटक देख रही थीं। वह बोला, ''क्या बात है? लकड़ी की आँख और इस तरह मुझे घूरती है !''

उसे कोई जवाब नहीं मिला। फिर उसने नाक बनाई, लेकिन देखते-देखते नाक लम्बी होने लगी। इतनी लम्बी कि बस कुछ न पूछो! जेपेत्तो बार-बार उसे काटता था, छीलता था, लेकिन फिर भी वह लम्बी हो जाती थी। वह चिढ़कर पुतले का मुँह बनाने लगा। अभी मुँह पूरा बन भी न पाया था कि अचानक पुतला हँस पड़ा, 'ही-ही-ही, हा-हा-हा!'

''चुप रहो! इस तरह मत हँसो!'' जेपेत्तो ने उसे डाँटते हुए कहा। वह मारे डर के चुप हो गया। जेपेत्तो ने गला, कन्धा, पेट और बाँहें बनाने के बाद उसके हाथ बनाए। जैसे ही उसके हाथ बने कि उस विचित्र पुतले ने जेपेत्तो के बाल खींचने शुरू किए। फिर उसने उसकी टोपी उतार ली। जेपेत्तो चीखा, ''यह क्या है? मेरी टोपी दे दो!''

लेकिन पिनोकियो ने टोपी उसे देने के बजाय खुद पहन ली। जेपेत्तो ने नाराज़ होकर उसे दो-चार चाँटे जड़ दिए। लेकिन जल्दी ही उसे इसका जवाब मिल गया। जैसे ही उसने पिनोकियो के दोनों पैर बनाए कि खटाक से पुतले ने उसकी नाक पर ठोकर मार दी। जेपेत्तो

को यह बहुत बुरा लगा। लेकिन फिर भी उसने सोचा कि कोई बात नहीं, मैंने अभी इसे पीटा था, इसीलिए इसने ठोकर मार दी। वह पिनोकियो को चलना सिखाने लगा। देखते-देखते पिनोकियो चलना सीख गया और दौड़ता हुआ बाहर भाग गया। जेपेत्तो उसके पीछे भागा। लेकिन उसे पकड़ नहीं सका, क्योंकि पिनोकियो बहुत तेज़ी से भाग रहा था। जेपेत्तो ने लोगों को चिल्लाकर इशारा किया, ''पकड़ो, पकड़ो! इसे पकड़ लो!'' लेकिन लोग उलटे तमाशा देखने लगे।

इतने में एक सिपाही ने यह हल्ला सुना तो उसने पिनोकियो का रास्ता रोक लिया। पिनोकियो ने उसकी टाँगों के बीच से निकलकर भागने की कोशिश की, लेकिन सिपाही ने उसकी लम्बी नाक पकड़ ली। इतने में जेपेत्तो भी वहाँ आ पहुँचा। उसने पिनोकियो को डाँटते हुए कहा, ''चलो, मैं अभी तुम्हारे कान उमेठता हूँ।''

यह कहकर जैसे ही उसने उसका कान पकड़ना चाहा, तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसके कान ही नहीं थे। अब उसे अपनी गलती याद आई कि उसने पिनोकियो के कान ही नहीं बनाए, इसलिए वह उसकी गर्दन पकड़कर उसे झकझोरने लगा। इतने लोगों के सामने यह अपमान पिनोकियो को बहुत बुरा लगा। वह ज़मीन पर लेट गया और सिसकने लगा। अब तक वहाँ काफी लोग इकट्ठे हो गए थे। उन्हें उस पर दया आ गई। एक आदमी बोला, ''बेचारा आखिर काठ का ही तो पुतला है। वह घर नहीं जाना चाहता, तो क्या बुरा करता है! यह बूढ़ा मारते-मारते उसकी जान ले लेगा।'' लोगों ने सिपाही को समझा-बुझाकर पिनोकियो की जान बचाने को कहा। सिपाही ने पिनोकियो को छुड़वा दिया और लोगों के कहने पर जेपेत्तो को गिरफ्तार कर लिया। वह गिड़गिड़ाने लगा, लेकिन किसीने उसकी बात नहीं मानी। सिपाही उसे जेल की ओर ले जाने लगा। उसने रोते-रोते कहा, ''अरे मूर्ख लड़के, यह तूने क्या किया, तू इतना भी भूल गया कि मैंने

तुझे कितनी मुश्किल से बनाया है! मैंने तुम्हें भलामानस बनाने की कितनी कोशिश की, लेकिन तुम तो शुरू से ही शरारती निकले।''

लेकिन पिनोकियो यह सब सुनने के लिए ठहरा नहीं। ज्योंही सिपाही ने उसे छोड़ा कि वह वहाँ से भाग निकला। भागते-भागते वह फिर से घर लौट आया। अन्दर घुसकर उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया

और आराम करने के लिए ज़मीन पर बैठ गया।

इतने में एक झींगुर पास आकर गाना गाने लगा। पिनोकियो ने चिढ़कर कहा, ''तुम यहाँ चिल्लाओ मत। चले जाओ। यह मेरा कमरा है।''

झींगुर आश्चर्य से अपनी आँखें मटकाते हुए बोला, ''क्या? तुम्हें मालूम है, मैं इस कमरे में सौ साल से रह रहा हूँ! ख़ैर, मैं जा सकता हूँ महाशय, लेकिन मैं तुम्हें एक बहुत बड़ी बात बताना चाहता हूँ। वह यह कि जो लड़के घर से इस तरह भागते हैं वे अच्छे नहीं होते। वे दुनिया में कोई काम नहीं कर सकते। उन्हें बाद में पछताना पड़ता है।''

पिनोकियो हँसकर बोला, ''रहने दो, बेकार मुझे बहकाओ मत। मैं कल ही यहाँ से भाग जाऊँगा। वरना ये लोग मुझे पढ़ने के लिए स्कूल भेजेंगे। मैं तो खेलना चाहता हूँ।''

झींगुर बोला, ''यह इसलिए कि तुम एक पुतले हो और तुम्हारा सिर लकड़ी का है।'' यह सुनकर पिनोकियो को गुस्सा आ गया। उसने एक हथौड़ी उठाकर झींगुर की ओर फेंकी। वह उसे मारना नहीं, भगाना चाहता था। लेकिन हथौड़ी झींगुर के सिर पर पड़ी और वह मर गया।

पिनोकियो को बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन इस समय उसे इतनी भूख लगी हुई थी कि अफसोस करने का उसके पास समय नहीं था। उसने देखा, अंगीठी पर कोई चीज़ पक रही है। उसने हाथ बढ़ाकर उसे लेना चाहा। लेकिन यह क्या? यह सब एक चित्र था। यह देखकर उसे बहुत दुःख हुआ और उसकी नाक बहने लगी। जब वह दुःखी होता था तो उसकी नाक बहने लगती थी। उसने कमरे का कोना-कोना छान मारा, लेकिन उसे खाने की कोई चीज़ न मिली।

निराश होकर वह एक बार फिर कमरे में इधर-उधर टटोलने लगा। अचानक उसे एक मुर्गी का अण्डा मिल गया। वह खुशी से नाच उठा। उसने अंगीठी में आग सुलगाई और आमलेट बनाने की तैयारी

की। जैसे ही उसने उसका छिलका तोड़ा कि उसमें से सफेदी और ज़र्दी के बजाय एक बच्चा कूदकर बाहर आ गया। चूज़े ने झुककर बड़े आदर से पिनोकियो को सलाम किया और कहा, ''शुक्रिया, पिनोकियो साहब! अण्डा तोड़ने में आपको कोई तकलीफ तो नहीं हुई? अच्छा, मैं चलूँ। अलविदा!'' यह कहकर उसने पंख फड़फड़ाए और खिड़की से कूदकर बाहर हो गया।

बेचारा कठपुतला देखता रह गया। मारे भूख के उसकी जान निकल रही थी। वह रोने लगा, और सिसकते-सिसकते बोला, ''झींगुर ठीक ही कह रहा था, मुझे इस तरह घर से अकेले नहीं भागना चाहिए था। अगर इस समय पापा घर में होते, तो भला मैं इस तरह भूखा क्यों मरता?''

जब घर में खाने को कुछ नहीं मिला तो उसने सोचा कि चलो, बाहर सड़क पर चला जाए। शायद कोई भला आदमी रोटी का टुकड़ा दे दे।

3

जाड़े की रात थी। बाहर बर्फीली आँधी चल रही थी। पेड़ हिल रहे थे। पिनोकियो तूफान से बहुत डर रहा था। लेकिन इस समय उसे इतनी तेज़ भूख लगी थी कि आँधी-तूफान की परवाह किए बिना वह घर से निकला और गाँव की तरफ दौड़ चला। लेकिन वहाँ जाने पर उसे और निराशा हुई। घरों के दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द थीं। गलियाँ सूनी पड़ी थीं। अन्त में मजबूर होकर पिनोकियो ने एक मकान का

दरवाज़ा खटखटाना शुरू किया। एक बुढ़े आदमी ने ऊपर खिड़की से झाँका और गुस्से में डाँटते हुए कहा, ''क्या है? इतनी रात गए क्या माँगने आए हो?''

''ज़रा मेहरबानी करके मुझे कुछ खाने को दीजिए।''

''क्या, क्या चाहिए तुम्हें, खाना? अच्छा देता हूँ, ठहरो।'' बूढ़े ने कहा। उसने सोचा, शायद यह कोई शरारती लड़का है। जान-बूझकर तंग करने आया है। ज़रा इसकी अक्ल ठिकाने लगानी होगी। वह थोड़ी देर में फिर खिड़की में लौट आया और बोला, ''लो, अपनी टोपी फैलाओ!''

पिनोकियो ने जैसे ही अपनी टोपी उतारी कि ऊपर से एक बाल्टी ठण्डा पानी उस पर आ गिरा। वह बुरी तरह भीग गया। मारे ठण्ड के पिनोकियो ठिठुरने लगा। एक तो भूख और ऊपर से यह ठण्डा पानी। पिनोकियो की आँखों में आँसू आ गए। वह दौड़ता-दौड़ता घर लौटा।

उसके पैर एकदम सुन्न हो गए थे। वह पैरों को सेंकने के लिए अंगीठी की ओर फैलाकर सो गया। थोड़ी देर में उसे नींद आ गई। वह इतनी गहरी नींद में था कि उसके लकड़ी के पैर जलने लगे तो उसे कुछ पता ही न चला। जलते-जलते पैर राख हो गए। सवेरा हो गया। लेकिन अभी तक उसकी नींद नहीं टूटी थी। वह खर्राटे भर रहा था। अचानक उसने सुना कि कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। आँख खोलकर जंभाई लेते हुए उसने पूछा, ''कौन है भाई?''

''मैं हूँ, मैं।'' यह जेपेत्तो की आवाज़ थी।

''ओह पापा, तुम हो!'' यह कहकर पिनोकियो ने जैसे ही उछलकर खड़ा होना चाहा कि वह मुँह के बल ज़मीन पर आ गिरा। अब जाकर उसे पता चला कि उसके पैर न मालूम कहाँ गायब हो गए। बाहर जेपेत्तो बार-बार आवाज़ लगा रहा था।

कठपुतला सिसकते हुए बोला, ''पापा, मैं दरवाज़ा नहीं खोल

सकता। मेरे पैर कोई खा गया है।''

''किसने खाए तुम्हारे पैर?''

''बिल्ली ने!'' कोने में बैठी बिल्ली को देखकर कह दिया।

''दरवाज़ा जल्दी खोलो! बेकार मुझे तंग न करो!'' इसके जवाब में पिनोकियो रो पड़ा। अन्त में जेपेत्तो को विश्वास हो गया कि ज़रूर दाल में काला है।

बड़ी मुश्किल से वह खिड़की से होकर घर में आया। वह बहुत गुस्से में था। इसलिए पहले तो काफी देर तक वह पिनोकियो को डाँटता रहा, लेकिन जब उसने देखा कि वह सचमुच ज़मीन पर पड़ा है, तो उसे उस पर दया आ गई। उसे उठाकर उसने गले से लगा लिया और आँखों में आँसू भरकर कहा, ''बेटा पिनोकियो, ये तुम्हारे पैर कैसे जल गए?''

''मैं नहीं जानता पापा, बड़ी मुश्किल से रात गुज़ारी है। एक तो मैं भूखा था और ऊपर से झींगुर मुझे चिढ़ाने लगा। हालाँकि वह सही कह रहा था, लेकिन मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसपर हथौड़ा फेंका और वह मर गया।''

इस तरह पिनोकियो उसे रात-भर की कहानी सुना गया और अन्त में बोला, ''लेकिन हाय, अब तो मेरे पैर ही नहीं रहे! अब मैं क्या करूँगा!'' यह कहकर वह ज़ोर से रोने लगा।

जेपेत्तो समझ गया कि वह भूखा है। उसने अपनी जेब से तीन आड़ू निकालकर पिनोकियो को दे दिए।

पिनोकियो ने पलक मारते ही तीनों आड़ू गले के नीचे उतार दिए। जेपेत्तो उसे देखता ही रह गया। एक डकार लेकर पिनोकियो बोला, ''हाय, मैं तो अब भी वैसा ही भूखा रह गया!''

''लेकिन अब मेरे पास कुछ नहीं है।'' फिर पिनोकियो अपने पैरों के लिए रोने लगा और बार-बार उससे कहने लगा कि मेरे लिए

नए पैर बना दो।

"क्यों बना दूँ तुम्हारे नए पैर? इसलिए न, कि मौका मिलते ही तुम फिर से भाग निकलो?"

कठपुतले ने सिसकते हुए कहा, "नहीं, नहीं, पापा! अब मैं नहीं भागूँगा! तुम जो कहोगे, वही करूँगा। स्कूल पढ़ने जाऊँगा और भला लड़का बनूँगा।"

जेपेत्तो को उस पर हँसी भी आई और दुःख भी हुआ। घण्टे भर में ही उसने नए पैर तैयार कर लिए। फिर उसने कठपुतले से कहा, "आँखें बन्द करो और चुपचाप सो जाओ।"

पिनोकियो आँख मूँदकर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा। जेपेत्तो ने गोंद लगाकर बड़ी सफाई से दोनों पैर चिपका दिए। नए पैर मिलते ही पिनोकियो उछलकर खड़ा हो गया और खुशी से कमरे में नाचने लगा और बोला, "अब मैं ज़रूर स्कूल जाऊँगा। लेकिन पापा मेरे पास अच्छे कपड़े तो हैं ही नहीं।"

जेपेत्तो गरीब आदमी था। लेकिन अब कठपुतला स्कूल जाना चाहता था। इसलिए उसने फूलदार कागज़ काटकर उसके लिए नए कपड़े बना दिए। पैरों में लकड़ी के छिलके के जूते पहनाए और रोटी के एक टुकड़े को काट-पीटकर टोपी बना दी। पिनोकियो इन्हें पहनकर बड़ा खुश हुआ और बोला, "लेकिन खाली हाथ पढ़ने कैसे जाऊँ? एक किताब भी तो चाहिए।"

पिनोकियो वैसे तो बड़ा खुशमिज़ाज लड़का था, लेकिन अन्त में पिता की गरीबी देखकर उसे दुःख हुआ। लेकिन जेपेत्तो थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर अचानक खड़ा होते हुए बोला, "अच्छा, ठहरो, मैं अभी इन्तज़ाम करके आता हूँ।"

थोड़ी देर बाद जब वह लौटा, तो उसके हाथ में पिनोकियो के लिए एक किताब थी। लेकिन उसका कोट गायब था। वह सिर्फ क़मीज़

पहने था और बाहर बर्फ गिर रही थी। पिनोकियो ने पूछा, "कोट क्या हुआ ?"

"मैंने उसे बेच दिया। मुझे बड़ी गरमी लगती थी।" यह कहकर धीरे से वह मुस्करा दिया।

पिनोकियो फौरन समझ गया कि वह अपना कोट बेचकर उसके

लिए किताब लाया है। वह अपने को नहीं रोक सका और अपने पिता के गले से लिपटकर उसका मुँह चूमने लगा। फिर जैसे ही बर्फ का गिरना रुका कि वह अपनी किताब लेकर स्कूल चल पड़ा। रास्ते में वह तरह-तरह की बातें सोचता जा रहा था। उसने सोचा, 'आज मैं स्कूल में पढ़ना सीखूँगा, कल लिखना सीखूँगा और परसों गुणा-भाग करना। पढ़-लिखकर मैं खूब धन कमाऊँगा। अपने पापा के लिए सूती कोट खरीद लाऊँगा। वाह, सूती कोट क्यों? मैं तो सोने और चाँदी का कोट अपने पापा के लिए मँगाऊँगा। उसमें हीरे के बटन लगे होंगे। हाँ, यही ठीक रहेगा। देखो न, मेरे लिए कोट बेचकर वह किताब ले आया और अब जाड़े में बिना कोट के ठिठुर रहा है!...'

इसी तरह सोचते हुए वह चला जा रहा था। अचानक कहीं दूर उसे बंसी और ढोल बजने की आवाज़ सुनाई देने लगी—पी-पी-पी, ढम-ढम-ढम! वह सोचने लगा, पता नहीं, ये ढोल कहाँ बज रहे हैं : कहीं खेल हो रहा है और इधर मुझे स्कूल जाना है। अन्त में उसने अपने मन को समझाते हुए कहा, 'आज तो मैं ढोल सुनने जाऊँगा। स्कूल कल चला जाऊँगा।' और फिर वह उसी तरफ दौड़ पड़ा जिधर से ढोल की आवाज़ आ रही थी।

अन्त में वह एक छोटे-से चौक में पहुँचा, जहाँ एक बड़ा-सा तम्बू तना था। उस तम्बू के आगे दर्शकों की बड़ी भीड़ लगी थी। पिनोकियो ने एक लड़के से पूछा, ''क्यों जी, उस तम्बू में क्या हो रहा है?''

''इस पर लिखा है—कठपुतली नाटक-कम्पनी। टिकट है बीस पैसे।''

पिनोकियो का मन नाटक देखने के लिए मचल पड़ा। उसके पास पैसे नहीं थे। अब क्या किया जाए? अन्त में बड़ी बेशर्मी से उसने उस लड़के से कहा, ''क्यों, तुम मुझे बीस पैसे उधार दोगे?''

''हाँ, हाँ, मैं तुम्हें उधार दे सकता हूँ।'' उस लड़के ने अपनी

जेब से एक सिक्का निकालते हुए कहा, ''लेकिन पता नहीं, क्या बात है कि मैं आज तुम्हें दे नहीं सकता!''

''अच्छा, न हो तो तुम बीस पैसे में मेरा कोट खरीद लो।'' पिनोकियो बोला।

''तुम्हारे इस कागज़ के कोट का मैं क्या करूँगा? यह तो पानी में भीग जाएगा।''

अब पिनोकियो की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह खेल देखना चाहता था। इतनी दूर आकर बिना खेल देखे कैसे लौट सकता था! कुछ हिचकते हुए उसने फिर कहा, ''अच्छा, तुम मेरी किताब ले लो और बीस पैसे दे दो।''

''मैं क्या करूँगा किताब को! मेरे पास खुद अपनी किताब है। क्या तुम समझते हो, मेरे पास किताब नहीं है!'' वह लड़का कहने लगा।

लेकिन तब तक एक फेरीवाले ने दोनों की बातें सुन लीं। वह पास आकर बोला, ''लाओ कहाँ है किताब! मैं देता हूँ बीस पैसे।''

पिनोकियो ने फौरन किताब उसके हाथ बेच दी।

4

टिकट कटाकर पिनोकियो अन्दर तम्बू में पहुँचा। खेल शुरू हो गया। इस समय दो कठपुतलों की लड़ाई दिखाई जा रही थी। दोनों आपस में खूब झगड़ रहे थे। इतने में अचानक हरले नाम के एक कठपुतले की नज़र पिनोकियो पर पड़ी और वह लड़ना बन्द करके एकटक पिनोकियो की ओर देखने लगा और फिर दोनों ज़ोर से चिल्लाए,

"अरे, यह तो अपना पिनोकियो है! पिनोकियो! पिनोकियो!"

इतने में पर्दे के पीछे से एक कठपुतली ने झाँका और वह भी खुशी से चिल्लाई, "अरे हाँ, यह तो पिनोकियो है !"

देखते-देखते कई कठपुतले और कठपुतलियाँ एक के बाद एक कूदकर मंच पर आए और खुशी से चिल्लाने लगे, "पिनोकियो आ गया! पिनोकियो आ गया! पिनोकियो हमारा भाई है! पिनोकियो ज़िन्दाबाद।"

कठपुतलों ने हल्ला मचाना शुरू किया। खेल रुक गया। पिनोकियो भी अपने भाइयों से मिलने के लिए दौड़ पड़ा। किसी ने उसे कन्धे पर उठाया तो किसी ने प्यार से उसका हाथ खींचना शुरू किया। लेकिन दर्शक तो खेल देखने आए थे। वे चिल्लाने लगे, "खेल शुरू करो !"

लेकिन कठपुतले पिनोकियो से मिलकर इतने खुश थे कि उन्हें काम करने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। हल्ला सुनकर नाटक-कम्पनी का मालिक, जो देखने में जादूगर-सा लगता था, दौड़ता हुआ अन्दर आ पहुँचा। उसके आते ही सन्नाटा छा गया। वह खूब भारी आवाज़ में पिनोकियो को डाँटकर बोला, "क्यों जी, तुम यहाँ गड़बड़ी मचाने के लिए क्यों आए? कौन हो तुम?"

पिनोकियो ने डरते हुए कहा, "नहीं साहब, मैंने कुछ नहीं किया। मैं तो खेल देखने आया हूँ।..."

"चुप रहो! खेल खत्म होने के बाद तुम्हारी खबर लूँगा। चलो, इधर आओ!" यह कहकर जादूगर उसे खींचता हुआ दूसरी तरफ ले गया।

जब खेल खत्म हो गया तो जादूगर अपने रसोईघर में खाना खाने पहुँचा। वहाँ धीमी आँच जल रही थी और उसपर एक पूरी भेड़ भूनी जा रही थी। आग ठीक से जल नहीं रही थी, इसलिए

जादूगर ने चिल्लाकर हरले और नेल्लो को आवाज़ दी। फौरन वे लोग अपने लकड़ी के पैर पटकते हुए दौड़े आए। "जाओ, उस कठपुतले को ले आओ। उसे मैंने रस्सी में बाँधकर एक खूँटी में लटका रखा है। मुझे लगता है कि वह खूब सूखी लकड़ी का बना है। अगर उसे जलाया जाए तो आग तेज़ हो जाएगी और मेरी भेड़

भी भुन जाएगी।''

उसका यह हुक्म सुनकर दोनों कठपुतले बुरी तरह से घबराए। थोड़ी देर में वे पिनोकियो को खींचते हुए रसोईघर में ले आए। पिनोकियो बहुत हाथ-पैर फेंक रहा था। और इस तरह तड़प रहा था जैसे पानी से बाहर निकाली हुई मछली तड़पती है। वह फूट-फूटकर रो रहा था, और चिल्ला रहा था, ''पापा, पापा! मुझे बचाओ! मैं नहीं मरूँगा!''

जादूगर देखने में बड़ा डरावना लग रहा था। लेकिन उसका दिल उतना ही मुलायम था। जब उसने पिनोकियो को इस तरह तड़पते देखा तो उसे दया आ गई और दया आते ही वह छींकने लगा। उसे जब भी किसी पर दया आती थी तो उसकी छींक शुरू हो जाती थी।

उसे छींकते हुए देखकर हरले ने पिनोकियो से कहा, ''लो, भाई बड़े भाग हैं तुम्हारे! तुम बच गए! जादूगर के छींकने का मतलब यह होता है कि उसे तुम पर दया आ रही है।''

पिनोकियो बड़ा खुश हुआ। लेकिन उसकी सिसकी अब भी बन्द नहीं हुई थी।

''क्या तुम्हारे माता-पिता ज़िन्दा हैं?'' जादूगर ने छींकते हुए पूछा।

''हाँ, पापा हैं, और माँ के बारे में मैं नहीं जानता।''

''भला बताओ, अगर तुम्हें मैंने जला दिया होता, तो तुम्हारे पापा को कितना अफसोस होता!...अब मुझे अपना ही कोई कठपुतला जलाना पड़ेगा। अरे, सुनो, सिपाहियो, सुनो!''

जादूगर ने अपने लकड़ी के सिपाहियों को आवाज़ दी। वे लोग फौरन कदम मिलाकर चलते हुए उसके सामने आ पहुँचे। जादूगर ने कहा, ''हरले को पकड़ लो और अच्छी तरह हाथ-पैर बाँधकर उसे

चूल्हे में झोंक दो। किसी तरह भेड़ तो भुन जाए।''

यह सुनकर हरले के होश उड़ गए। सिपाही उसे खींचने लगे। पिनोकियो को यह बहुत बुरा लगा। वह रोने लगा और जादूगर के पैर पकड़कर बोला, ''जादूगर साहब, दया कीजिए, उसे छोड़ दीजिए!''

लेकिन जादूगर ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने फिर कहा, ''हुज़ूर, जादूगर साहब! दया कीजिए, सरकार!''

जादूगर ने जब अपने को हुज़ूर और सरकार कहलाते सुना तो खुश होकर मुस्कराना शुरू किया। फिर उसने पिनोकियो से पूछा, ''क्या है, क्या चाहते हो तुम?''

''भला यह कैसे हो सकता है कि मैं देखता रहूँ और मेरा सच्चा मित्र हरले आग में झोंक दिया जाए। अपने सिपाहियों को कहिए कि उसे छोड़ दें और उसकी जगह मुझे जला दें।''

उसकी यह बात सुनकर जादूगर को भी दया आ गई। उसने पिनोकियो की पीठ थपथपाते हुए कहा, ''शाबाश। खैर, मैं हुक्म देता हूँ कि हरले को छोड़ दिया जाए। आज मेरी भेड़ कच्ची ही रहेगी लेकिन याद रखना, आगे फिर मैं उसे कभी नहीं छोड़ूँगा।''

दूसरे दिन जादूगर ने पिनोकियो से पूछा, ''तुम्हारे पिता का क्या नाम है, वह क्या करता है?''

''उसका नाम जेपेत्तो है और काम है भीख माँगना।''

''भीख में क्या कमा लेता है वह?''

''कमाना कैसा? यहाँ कभी एक पैसा नहीं बचता। देखिए न, मेरी किताब खरीदने के लिए पापा को अपना कोट बेच देना पड़ा। इस जाड़े में उसे बिना कोट के ही रहना पड़ता है।''

''उफ, बेचारा! अच्छा लो, ये पाँच मोहरें लो। जाओ, अपने पापा को दे देना।''

पिनोकियो ने उसे सलाम किया और कम्पनी के सभी कठपुतलों

और कठपुतलियों से मिला। सबसे प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर वह घर की ओर चल पड़ा।

लेकिन अचानक रास्ते में उसे लंगड़ी लोमड़ी और अंधी बिल्ली मिलीं। वे दोनों बेचारी एक दूसरे की मदद करती हुई कहीं जा रही थीं। लोमड़ी लंगड़ी थी। इसलिए बिल्ली का सहारा लेकर चलती थी और अंधी बिल्ली को रास्ता बताती चलती थी। पिनोकियो को देखकर लोमड़ी ने बड़े अदब से कहा "सलाम, भैया पिनोकियो!"

"तुम्हें मेरा नाम कैसे मालूम हुआ?" पिनोकियो ने पूछा।

"वाह, मैं तो तुम्हारे पापा को भी जानती हूँ! वह बेचारा अपनी फटी कमीज़ पहने जाड़े में ठिठुर रहा था।"

"हाय पापा! लेकिन खैर, कोई बात नहीं। अब आगे उन्हें ठण्ड में ठिठुरना नहीं पड़ेगा!"

"क्यों?" लोमड़ी ने आश्चर्य से पूछा।

"क्योंकि अब हम लोग बड़े आदमी हो गए!"

"बड़े आदमी और तुम!" लोमड़ी नफरत से हँसते हुए बोली। बिल्ली को भी हँसी आई। लेकिन वह अपनी हँसी छिपाने के लिए अपनी लम्बी-लम्बी मूँछों पर हाथ फेरने लगी। पिनोकियो ने गुस्से में डाँटते हुए कहा, "भला इसमें हँसने की क्या बात है! यह देखो मेरे पास पाँच मोहर हैं, सोने की मोहरें!" यह कहकर उसने उसे मोहरें दिखा दीं।

मोहरों की आवाज़ सुनकर लोमड़ी ने अपना एक पंजा आगे फैला दिया, जो पहले टूटा हुआ-सा लगता था और जिसके द्वारा वह चलने में लंगड़ाती थी। यही नहीं उस अंधी बिल्ली ने भी अपनी दोनों आँखें खोलकर मोहरों की ओर देखा, और पिनोकियो को मालूम हो उसके पहले ही उसने फिर से आँखें मूँद लीं।

"और इसका तुम क्या करोगे?"

"पहले तो इसमें से अपने पापा के लिए एक कोट बनाऊँगा, जो सोने और चाँदी का होगा और जिसमें हीरे के बटन होंगे और फिर अपने लिए एक किताब खरीदूँगा, क्योंकि मैं पढ़ना चाहता हूँ।"

"हाय क्या करोगे पढ़कर? देखते नहीं हो, पढ़ने के चक्कर में ही तो मेरी टाँग टूट गई।" लोमड़ी ने कहा।

तभी बिल्ली बोली, "और मुझे देखो, पढ़ने के चक्कर में मेरी दोनों आँखें चली गईं।"

तभी ऊपर पेड़ पर बैठी हुई एक चिड़िया बोली, "पिनोकियो, इन लोगों की बात मत मानना। ये सब झूठ बोल रही हैं। इनकी बात मानोगे तो पछताओगे।"

चिड़िया और भी कुछ कहने जा रही थी कि तब तक बिल्ली नज़र बचाकर पेड़ पर जा पहुँची और एक ही झपट्टे में चिड़िया को मार डाला। देखते-देखते वह चिड़िया को खा गई। चिड़िया को खाकर बिल्ली फिर से पहले की तरह अंधी बन गई।

"हाय, बेचारी चिड़िया।" पिनोकियो ने कहा और फिर बिल्ली से पूछा, "तुमने उसके साथ ऐसा सलूक क्यों किया?"

"उसे एक सीख देने के लिए।"

इतने में लोमड़ी ने उससे पूछा, "क्यों पिनोकियो, तुम अपना धन दूना करना चाहते हो? बताओ, तुम अपनी पाँच मोहरों को एक सौ या एक हज़ार या एक लाख बनाना चाहते हो?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं।"

"तो ठीक है, लेकिन इसके लिए घर जाने की बजाय तुम्हें हमारे साथ चलना पड़ेगा।"

"कहाँ? कहाँ ले जाना चाहती हो तुम मुझे?"

"उल्लुओं के देश में।"

कुछ देर सोचकर पिनोकियो बोला, "नहीं, मैं नहीं जाऊँगा।

पापा मेरी राह देख रहे होंगे। मैं उन्हीं के पास जाऊँगा। पता नहीं, कल उन पर क्या गुज़री होगी।''

''तो तुम जाओ। लेकिन इस तरह तुम आते हुए धन पर लात मार रहे हो।''

''हाँ तुम आते हुए धन पर लात मार रहे हो।'' बिल्ली बोली।

''आज और कल बस सिर्फ दो दिन में तुम्हारी पाँच मोहरें बढ़कर दो हज़ार हो जातीं।''

''हाँ, दो हज़ार हो जातीं।'' बिल्ली ने दोहराया।

''लेकिन यह हो कैसे सकता है?'' पिनोकियो ने पूछा।

लोमड़ी मुस्कराकर बोली, ''मैं बताती हूँ तुम्हें। उल्लुओं के देश में एक जादू का मैदान है। इस मैदान में गड्ढा खोदकर एक मोहर गाड़ देना। फिर उसपर दो घड़े पानी सींचकर दो चुटकी नमक छिड़क देना। फिर रात को सो जाना। सवेरे जब तुम जागोगे तो जानते हो तुम्हें क्या मिलेगा? उस जगह मोहरों का पेड़ उगा हुआ होगा और उसमें मोहरें लगी हुई होंगी। बस, फिर तुम दोनों हाथों से खूब मोहरें तोड़ना।''

पिनोकियो को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसे लालच हो आया। वह पूछने लगा, ''अच्छा, ऐसी बात है। अगर मैं अपनी पाँच मोहरें एक साथ बो दूँ तो क्या होगा?''

''तब तो इतनी मोहरें फलेंगी, इतनी मोहरें फलेंगी कि बस कुछ न पूछो। दो-ढाई हज़ार से ज़्यादा मोहरें होंगी।''

''अच्छा! तब तो उसमें से पाँच सौ मोहरें मैं तुम दोनों को इनाम में दूँगा।''

''इनाम? कैसा इनाम?''

बिल्ली और लोमड़ी ने कहा, ''हम लोग तो सिर्फ दूसरों का भला चाहते हैं।''

पिनोकियो ने सोचा, ये लोग कैसी भली हैं! सिर्फ दूसरों का भला ही करती हैं। फिर उसे ख्याल आया कि मुझे ढाई हज़ार मोहरें मिल जाएँगी। वह फौरन उन लोगों के साथ जाने को राज़ी हो गया।

वे लोग तेज़ कदमों से चल पड़े और चलते चले गए। शाम को एक सराय में पहुँचे। तब तक वे बहुत थक चुके थे। लोमड़ी ने कहा, ''आओ, इसी सराय में ठहर जाएँ। कुछ खा-पीकर हम लोग करीब आधी रात के समय फिर से यात्रा शुरू करेंगे ताकि सवेरा होते-होते जादू के मैदान में पहुँच जाएँ।''

जब तीनों खाना खाने बैठे तो लोमड़ी ने बीमार होने का बहाना बनाया और बिल्ली ने पेट खराब होने का। लेकिन फिर भी दोनों ने खूब कसकर खाना खाया और पिनोकियो बेचारा भूखा ही रह गया।

वह अपने कमरे में लौट आया। और लोमड़ी व बिल्ली दूसरे कमरे में चली गईं। कुछ देर आराम करके आधी रात को यात्रा शुरू करने की बात थी।

पिनोकियो को सोते ही नींद आ गई। वह सपना देखने लगा कि जादू के मैदान में अशर्फ़ियों के पेड़ उग आए और वह दोनों हाथों से उन्हें तोड़कर जेब में रखने लगा। लेकिन अचानक उसने सुना कि कोई दरवाज़ा खटखटा रहा है। दरवाजा खुलने पर मालूम हुआ कि सराय का मालिक उसे जगा रहा है।

सराय के मालिक ने उससे कहा, ''उठिए, आधी रात हो गई है। आपको जाना था न? आपके दोनों साथी तो चले गए। घर से तार आया था, शायद बिल्ली का बड़ा बच्चा बहुत बीमार है। लेकिन शाम को भोजन का पैसा उन्होंने नहीं दिया, क्योंकि वे आपके मेहमान थे। भला पैसा देकर आपका अपमान कैसे करते!'' पिनोकियो को बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन वह कुछ नहीं बोला और सरायवाले को

एक मोहर देकर उसने सराय का किराया अदा किया और फिर अकेले ही चल पड़ा।

सराय के बाहर बहुत घना अँधेरा था। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। पिनोकियो को आगे चलने पर एक पेड़ के तने पर एक छोटा-सा चमकता हुआ कीड़ा दिखाई दिया। पिनोकियो ने उससे पूछा, ''तुम कौन हो और यहाँ क्यों बैठे हो?''

उस कीड़े ने बहुत दबी हुई आवाज़ में कहा, ''मैं उस झींगुर का भूत हूँ जिसे तुमने हथोड़े से मार डाला था। पिनोकियो, मेरी बात मानो और घर लौट जाओ। तुम्हारा पिता तुम्हारी याद में रो रहा है। उसके पास जाओ और उसे अपने पास बची हुई चारों मोहरें दे दो। लोमड़ी और बिल्ली की बात मत मानो। वे तुम्हें धोखा देना चाहती हैं।''

रास्ते में फिर अँधेरा हो गया। पिनोकियो आगे बढ़ा। उसे इस बातूनी झींगूर का इस तरह रास्ते में आ जाना अच्छा नहीं लगा।

वह आगे बढ़ा तो अचानक पत्तियों में कुछ आवाज़ हुई। उसने घूमकर देखा तो मारे डर के उसकी साँस रुक गई। न मालूम कौन दो काले-काले-से लोग उसका पीछा कर रहे थे। उन्होंने सिर से लेकर पैर तक काला कपड़ा ओढ़ रखा था। छलांग लगाते हुए वे पिनोकियो की ओर बढ़े आ रहे थे। पिनोकियो को भागने का मौका नहीं मिला। उनमें से एक ने आगे बढ़कर उसकी बाँह पकड़ ली और कहा, ''पैसे दो या जान दो!''

पिनोकियो ने मोहरों को अपने मुँह में रख रखा था। उसे सराय में ही डर लग रहा था कि कोई उसकी मोहरें न चुरा ले। मोहरें अब भी उसके मुँह में थीं। इसलिए वह बोल नहीं पा रहा था। वह बार-बार अपना सिर हिलाता था और हाथ के इशारे से उन्हें बताने की कोशिश करता था कि मेरे पास कुछ नहीं है। मुझे छोड़ दिया

जाए।

''लाओ, निकालो, जो कुछ तुम्हारे पास है! पैसे दे दो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे!'' उनमें से एक ने दाँत पीसते हुए कहा।

''हाँ, हम तुम्हें मार डालेंगे! तुम्हारे पापा को भी मार डालेंगे!'' दूसरे ने दोहराया।

"नहीं, नहीं, मेरे पापा को मत मारना!" पिनोकियो घबराकर चिल्लाया। इससे उसके मुँह में रखी हुई मोहरें बज उठीं।

"ओह, हमें धोखा देना चाहते हो! तुमने मुँह में पैसे भर रखे हैं। निकालो उन्हें, निकालो।" वे दोनों चिल्लाए। लेकिन पिनोकियो कसकर मुँह बन्द किए चुपचाप खड़ा रहा। वे दोनों उस पर टूट पड़े और उसे ज़मीन पर पटककर उसका मुँह खोलने की कोशिश करने लगे। लेकिन पिनोकियो ने इस तरह कसकर मुँह बन्द कर रखा था जैसे उसके मुँह में कील जड़ी हों। और सचमुच उसके दाँत कीलों से बने हुए थे। जब दोनों गुण्डे हार गए और पिनोकियो से पैसा नहीं निकलवा सके तो उनमें से एक ने जंग लगा हुआ कील निकाला और उसको पिनोकियो के मुँह में ठूँसकर उसे खोलने की कोशिश करने लगा। लेकिन पिनोकियो पर उसका कोई असर नहीं हुआ। उलटे उसने उसका हाथ काट खाया। उसके दाँत इतने तेज़ थे कि उसने हाथ बिलकुल काटकर ज़मीन पर थूक दिया। पर उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह किसी गुण्डे का हाथ नहीं बल्कि बिल्ली का एक पँजा था। वह बना हुआ गुण्डा बिल्ली की आवाज़ में रोने लगा। पिनोकियो मौका देखकर भाग निकला। लेकिन वे दोनों उसका पीछा करने लगे। अन्त में थककर पिनोकियो एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। जब वे दोनों भी उसका पीछा करते हुए पेड़ पर चढ़े तो उसने उन्हें ढकेल दिया। वे नीचे गिरे और उनके हाथ-पैर छिल गए। लेकिन वे दोनों बड़े बदमाश थे। इस तरह आसानी से हारने वाले नहीं थे। उन्होंने सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और पेड़ के नीचे आग जला दी। पिनोकियो उछलकर दूसरे पेड़ पर जा पहुँचा। लेकिन उन्होंने उसका पीछा नहीं छोड़ा।

इसी तरह सवेरा होने पर आया, लेकिन वे दोनों उसके पीछे पड़े रहे।

पिनोकियो दौड़ते-दौड़ते थक गया था। इन गुण्डों से बचना असम्भव लगता था। वे हाथ धोकर उसके पीछे पड़े थे। कहीं बचने की जगह भी नहीं थी। लेकिन गर्दन घुमाकर देखा तो उसे कुछ दूर पर एक छोटा-सा सफेद मकान दिखाई दिया जो पेड़ों के झुरमुट में छिपा था।

वह फौरन उसी मकान की ओर दौड़ पड़ा। काला लबादा ओढ़े हुए वे दोनों डाकू उसके पीछे-पीछे चले आ रहे थे। दो घण्टे की लगातार दौड़ के बाद वह वहाँ जा पहुँचा और ज़ोरों से दरवाज़ा पीटने लगा। अन्त में ऊपर खिड़की खुली और उसमें से एक छोटी-सी लड़की बाहर झाँकने लगी।

पिनोकियो उसे ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ देने लगा। लेकिन इतने में किसी ने पीछे से आकर उसकी गर्दन पकड़ ली। पिनोकियो ने देखा, दोनों डाकू आ पहुँचे थे। वह उन्हें देखकर थर-थर काँपने लगा। लेकिन उसने अपना मुँह उसी तरह कसकर बन्द रखा। एक डाकू ने उसका गला दबाते हुए कहा, "मुँह खोलो, पैसे बाहर निकालो!" यह कहकर एक ने अपनी जेब से एक चाकू निकाला। दूसरे डाकू ने भी चाकू निकाला। दोनों ने एकाएक पिनोकियो पर चाकू से वार किया। लेकिन उस पर उसका कोई असर नहीं हुआ, क्योंकि यह लकड़ी का बना था। उलटे उनके चाकू टूट गए। उन दोनों ने आश्चर्य से एक-दूसरे की ओर देखा। उन्होंने दूसरे चाकू निकाले, लेकिन वे भी उसी तरह टूट गए। अन्त में उनमें से एक बोला, "अरे यह यों नहीं मरेगा, इसे फाँसी पर चढ़ा दो!"

फौरन दोनों ने पिनोकियो के हाथ कसकर उसकी पीठ पर बाँधे और फिर गले में रस्सी बाँधकर उसे एक पेड़ की डाल से लटका दिया। फिर वे वहीं बैठकर उसके मरने का इन्तज़ार करने लगे। लेकिन तीन घण्टे बाद भी पिनोकियो आँखें झपकता रहा और हाथ-पैर फेंकता

रहा। अन्त में वे दोनों बैठ-बैठे ऊब गए और यह सोचकर कि यह पुतला कल तक तो मर जाएगा, वे दोनों वहाँ से चल दिए।

पिनोकियो को इस हालत में सचमुच बड़ी तकलीफ हो रही थी। हवा ज़ोरों से बहने लगी थी और वह डाली में लटका हुआ इधर-उधर झूल रहा था। अन्त में उसकी आँखों के आगे धीरे-धीरे अँधेरा छाने लगा। फिर भी अभी उसने आशा नहीं खोई थी। उसे आशा थी कि कोई न कोई मुझे बचा ही लेगा। वह ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ लगाने लगा, ''बचाओ, बचाओ!''

लेकिन थोड़ी देर में उसकी आवाज़ भी बन्द हो गई, और शरीर भी कड़ा पड़ने लगा।

5

पिनोकियो इसी तरह चुपचाप पेड़ की डाल पर लटका हुआ था। इतने में उस काले बालोंवाली लड़की ने खिड़की खोलकर बाहर झाँका। वह यह देखकर दंग रह गई कि जो कठपुतला अभी उससे सहायता माँग रहा था उसे किसी ने पेड़ की डाली से लटका दिया है। उसने फौरन तीन बार ताली बजाई।

देखते-देखते वहाँ एक बड़ा-सा बाज़ आ बैठा। आते ही उसने उस लड़की को सलाम किया और कहा, ''कहिए, क्या हुक्म है?''

असल में वह लड़की जंगल की परी थी और वहीं रहती थी। जंगल के सब पशु-पक्षी उसका कहना मानते थे। उसने कहा, ''जाओ, उस कठपुतले को फाँसी से बचाओ। अपनी चोंच से रस्सी काट दो

और फिर उसे आहिस्ता से उतारकर पेड़ से नीचे घास पर लिटा दो।''

बाज़ गया और दो मिनट में ही काम पूरा करके लौट आया।

परी ने फिर तीन बार ताली बजाई, और फौरन एक सफेद झबरा-सा कुत्ता आ खड़ा हुआ। उसने कुत्ते से कहा, ''मोती, जाओ, गाड़ी निकाल लो और उस बड़े पेड़ के पास जो लड़का घास पर लेटा है, उसे आहिस्ता से उठाकर यहाँ ले आओ।''

कुछ देर बाद गाड़ी लौट आई। परी अपने घर के दरवाज़े पर खड़ी गाड़ी की राह देख रही थी। वह कुत्ते की मदद से पिनोकियो को उठाकर अन्दर ले गई। एक सुन्दर, छोटे-से कमरे में उसे लिटाया गया। जंगल के मशहूर डाक्टरों को इलाज के लिए बुलाया गया। डाक्टर लोग दौड़े हुए आए। इनमें से एक कौआ था, दूसरा उल्लू, तीसरा झींगुर। तीनों जंगल के जाने-माने डाक्टर थे। उनके आने पर परी ने कहा, ''ज़रा आप लोग बताइए कि यह अभागा कठपुतला मर गया है या ज़िन्दा है।''

सबसे पहले कौए ने पिनोकियो की नब्ज़ देखी। उसने अपनी राय दी, ''मेरे ख्याल में तो यह मर चुका है। लेकिन हो सकता है कि यह अब भी ज़िन्दा हो।''

उल्लू ने कहा, ''मेरे ख्याल में तो यह अभी ज़िन्दा है। लेकिन हो सकता है कि यह अब मर भी गया हो।''

यह सुनकर झींगुर ने अपनी भौंहे सिकोड़ीं और नाराज़ होकर कहा, ''मेरी राय में तो यह कठपुतला जो यहाँ पड़ा है, न ज़िन्दा है न मरा। यह कठपुतला है और इसे मैंने पहले भी कभी देखा है।''

झींगुर की आवाज़ सुनते ही पिनोकियो फौरन उठ बैठा, और फिर लेट गया। झींगुर कह रहा था, ''यह कठपुतला एक नामी बदमाश है। यह आवारा और खराब लड़का है।'' यह सुनकर पिनोकियो ने बिस्तर में अपना मुँह छिपा लिया।

तब तक कमरे में किसीके सिसक-सिसककर रोने की आवाज़ आने लगी। सबने आश्चर्य से देखा कि पिनोकियो फूट-फूटकर रो रहा है। कौए ने गम्भीरता से कहा, ''अगर मरा हुआ आदमी रोने लगता है तो समझिए कि उसकी तबीयत ठीक होनेवाली है।''

उल्लू ने कौए की राय से असहमत होते हुए कहा, ''मेरे ख्याल में अगर मरा हुआ आदमी रोने लगता है तो समझिए कि उसे मरने का अफसोस है।''

जंगल की परी ने तीनों डाक्टरों को आदर सहित विदा किया। फिर उसने पिनोकियो के पास जाकर उसके माथे पर हाथ रखा तो उसका माथा जल रहा था। उसे बुखार था। परी अपनी दवा बनाकर एक गिलास में लाई और बहुत प्यार से बोली, ''लो, इसे पी लो। कुछ ही दिनों में तुम्हारी तबीयत ठीक हो जाएगी।''

पिनोकियो ने बहुत अनमने ढंग से दवाई का प्याला लिया और उसे सूँघकर होंठों के पास ले गया और फिर उसी तरह से चिल्लाने लगा, ''यह कड़वी है! मैं नहीं पिऊँगा! मिश्री का एक टुकड़ा दो।''

परी ने खीझकर उसे मिश्री का टुकड़ा दिया और फिर दवा पीने को कहा। पिनोकियो फौरन उस टुकड़े को निगल गया और फिर से बहाने बनाने लगा।

परी ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माना। इतने में चार मोटे-मोटे खरगोश एक अर्थी उठाए हुए उनके पास आ खड़े हुए। पिनोकियो उन्हें देखकर बहुत घबराया और चिल्लाया, ''तुम लोग कौन हो? मुझे कहाँ ले जाना चाहते हो? मैं अभी मरा नहीं हूँ।''

खरगोश बोले, ''हाँ, हाँ, अभी नहीं मरे हो। लेकिन थोड़ी देर में मर जाओगे, क्योंकि तुमने दवा पीने से इन्कार कर दिया है।'' यह सुनकर पिनोकियो बहुत घबराया। उसने फौरन परी के हाथ से प्याला ले लिया और एक घूँट में ही दवा पी ली। परी मुस्कराने लगी और

चारों खरगोश बड़बड़ाते हुए लौट गए।

दवा पीने के बाद थोड़ी ही देर में पिनोकियो की तबीयत ठीक हो गई और वह बिस्तर से उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा। परी यह देखकर बहुत खुश हुई और उसने उसे अपने पास बिठाकर बातचीत करनी शुरू की और उससे पूछा, ''अच्छा, अब बताओ, तुम जंगल में कैसे आ फँसे थे और वे दोनों डाकू तुम्हारा पीछा क्यों कर रहे थे ?''

पिनोकियो ने उसे सारा क़िस्सा बता दिया कि किस तरह उस जादूगर ने खुश होकर उसे पाँच मोहरें दी थीं और किस तरह लंगड़ी लोमड़ी और अंधी बिल्ली ने उसे ठगने की कोशिश की थी और फिर किस तरह वह इन दो डाकुओं के चंगुल में फँस गया, जो उसे फाँसी पर लटकाकर भाग गए थे।

यह सब सुनकर परी ने पूछा, ''तो बची हुई चार मोहरें तुम्हारे पास हैं! उन्हें तुमने कहाँ छिपा रखा है?''

''वे न मालूम कहाँ खो गईं!'' पिनोकियो ने झूठ-मूठ कह दिया। हालाँकि मोहरें अब भी उसकी जेब में थीं। जैसे ही वह परी के सामने झूठ बोला, उसकी लम्बी नाक और भी लम्बी हो गई। परी ने उससे पूछा, ''मोहरों को किस जगह फेंक दिया तुमने?''

''यहीं कहीं जंगल में!'' वह फिर झूठ बोला और उसकी नाक दो अँगूल और बढ़ गई।

''अगर जंगल में ही तुम्हारी मोहरें खोई हैं तो तुम्हें मिल जाएँगी। मैं अभी नौकरों को खोजने भेजती हूँ।'' परी बोली।

''ओह, अब मुझे याद आया। मैंने मोहरें खोई नहीं। मोहरें मेरे मुँह में थीं और जब मैंने तुम्हारी दी हुई दवा पी तो वह मेरे पेट में उतर गई।'' यह तीसरी बार वह झूठ बोला था। अब उसकी नाक इतनी लम्बी हो गई कि वह आसानी से अपनी गर्दन नहीं हिला पाता था। उसकी लम्बी नाक देखकर परी हँसने लगी और बोली, ''लड़के, तुम इस तरह झूठ क्यों बोलते हो! देखो, झूठ बोलने से ही तुम्हारी नाक बढ़ती जा रही है।'' यह सुनकर पिनोकियो बहुत शर्मिन्दा हुआ। मारे शर्म के वह अपना मुँह छिपाने की कोशिश करने लगा। लेकिन उसकी नाक अब इतनी लम्बी हो गई थी कि वह कमरे के बाहर ही नहीं निकल पाता था। उसे रोना आ गया। परी को उसकी यह दशा देखकर दया आ गई। उसने ताली बजाई और दूसरे ही क्षण बहुत-से कठफोड़वे

आकर पिनोकियो की नाक पर बैठ गए। थोड़ी ही देर में उन्होंने काट-छीलकर उसकी नाक छोटी कर दी। पिनोकियो परी को धन्यवाद देता हुआ बोला, ''तुम बहुत अच्छी हो! तुम्हारी जैसी परी कहीं ढूँढे नहीं मिलेगी।''

परी भी खुश होकर बोली, ''तुम भी बहुत अच्छे हो! तुम यहीं रह जाओ। मैं तुम्हें अपना भाई बनाना चाहती हूँ। मुझे अपनी बहिन बना लो!''

''मैं यहाँ रहने को तैयार हूँ लेकिन मेरे पापा! उनका क्या होगा?''

''मैंने सब कुछ सोच लिया है। तुम्हारे पापा के पास खबर भेज दी गई है। वे आज रात तक पहुँच जाएँगे।'' पिनोकियो खुश होकर बोला, ''लेकिन मैं अपने पापा को रास्ते में ही मिलना चाहता हूँ। बहुत दिनों से उनसे नहीं मिला हूँ।''

''ठीक है, जाओ। वे शाम तक यहाँ आ जाएँगे। लेकिन अगर तुम्हारा मन नहीं मान रहा है तो जाओ, रास्ते में ही मिल लो। लेकिन ज़रा होशयारी बरतना। रास्ता जंगल से होकर जाता है।''

पिनोकियो अपने पापा का स्वागत करने के लिए चल पड़ा। जब वह चलते-चलते उस पेड़ के पास पहुँचा जहाँ उसे फाँसी पर लटकाया गया था तो झाड़ी के पास से ही लोमड़ी और बिल्ली निकल आईं। लोमड़ी बड़े प्यार से बोली, ''अरे पिनोकियो, तुम यहाँ क्या कर रहे हो भाई?''

''हाँ, तुम यहाँ क्या रहे हो भाई?'' बिल्ली ने दोहराया।

''कुछ न पूछो, बड़े संकट में फँस गया था मैं। जब उस रोज़ रात को तुम लोग मुझे छोड़कर चली आई थीं तो तुम्हें मालूम है क्या हुआ? रास्ते में मुझे दो डाकू मिल गए। वे मुझसे मोहरें छीनना चाहते थे।'' पिनोकियो ने बताया।

''डाकू? मोहरें छीनना चाहते थे? बड़े बदमाश थे!'' लोमड़ी

बोली।

"हाँ, सचमुच बड़े बदमाश थे!" बिल्ली ने दोहराया।

अचानक पिनोकियो की नज़र बिल्ली के एक पँजे पर पड़ गई। पंजा गायब था और वह लंगड़ाकर चल रही थी। पिनोकियो ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों, तुम्हारा वह पँजा क्या हुआ?"

बिल्ली कुछ सकुचाई। उसे कोई जवाब नहीं मिल रहा था। इतने में लोमड़ी बोली, "अरे, यह शर्माती है, बताएगी नहीं। मैं बतलाती हूँ। हुआ यह कि रास्ते में हमें एक भेड़िया मिला। वह कई दिनों का भूखा था और रास्ते में बैठकर भीख माँग रहा था। अब भला हम क्या भीख देते! अन्त में इसे उस पर दया आ गई। इसने अपना पंजा ही काटकर उसे खाने को दे दिया! तभी से यह लंगड़ी हो गई है।"

पिनोकियो यह सुनकर बड़ा खुश हुआ और बोला, "वाह, शाबाश! अगर सब बिल्लियाँ तुम्हारी तरह हो जाएँ तो चूहों का भाग जग जाएं!"

"अच्छा, इस समय तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारी मोहरे कहाँ हैं? क्या उन्हें जादू के मैदान में बोने नहीं चलोगे!"

"मोहरें तो मेरे पास ही हैं। चार बची हैं लेकिन आज मैं पापा का स्वागत करने जा रहा हूँ। मोहरें बोने फिर कभी चलूँगा।"

"फिर कभी? लेकिन शायद तुम्हें मालूम नहीं कि उस मैदान को एक आदमी ने खरीद लिया है। आज के बाद उसमें किसीको घुसने नहीं दिया जाएगा। थोड़ी ही देर में तुम अपनी चार मोहरों से दो हज़ार मोहरें बना सकते हो। चलना चाहो तो चलो।"

पिनोकियो कम उम्र का तो था ही। वह सब कुछ भूल गया। परी ने उसे मना किया था, यह भी उसे याद न रहा। वह उन दोनों के साथ चल पड़ा।

चलते-चलते वे लोग एक छोटे नगर में पहुँचे, जिसका नाम था

'बौड़म नगर'। उसमें दुनिया-भर के बदमाश जानवर और ठग-उचक्के, पशु-पक्षी रहा करते थे। इस नगर को पार करके वे लोग नगर के दरवाज़े के बाहर एक मैदान में पहुँचे। लोमड़ी बोली, "लो, आ पहुँचे हम लोग। यही है जादू का मैदान! अब तुम जल्दी-जल्दी गड्ढे खोदो और मोहरें बो दो।"

पिनोकियो ने एक बड़ा-सा गड्ढा खोदा और उसमें चारों मोहरें रख दीं औीर गड्ढा भर दिया, और फिर वह पानी भरने के लिए चला।

पानी लाकर उसने अपने पौधों को सींच दिया। यह देखकर लोमड़ी बोली, ''अब हम लोग यहाँ से चले चलें, यही ठीक रहेगा। तुम थोड़ी ही देर में आना और इस पेड़ से मोहरें तोड़ लेना।''

कठपुतले को यह सुनकर बड़ा आनन्द आया। अब थोड़ी ही देर में उसे दो हज़ार मोहरें मिलनेवाली हैं। उसकी सारी दरिद्रता इससे कट जाएगी। उसने फिर से वायदा किया कि पैसा मिलने पर मैं तुम दोनों को बहुत-सा इनाम दूँगा।

''अरे, नहीं-नहीं, हम लोग इनाम नहीं माँगते। हम तो सिर्फ दूसरों का भला करते हैं।'' फिर वे दोनों पिनोकियो से विदा लेकर चली गईं।

6

जब वे दोनों वहाँ से गए तो पिनोकियो भी नगर में लौट आया। वह इन्तज़ार करने लगा कि कब शाम हो और कब वह लौटकर जादू के मैदान में पहुँचे। उसकी आँखों के आगे मोहरों से लदे हुए पेड़ नाच रहे थे। वह मन में हिसाब लगा रहा था कि अगर हर पेड़ से एक हज़ार की बजाय पाँच हज़ार मोहरें निकल आएँ तो कितना अच्छा हो! अन्त में उसका मन नहीं माना और वह धीरे-धीरे टहलता हुआ मैदान के पास जा पहुँचा। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया और उस गड्ढे के पास जा पहुँचा जहाँ उसने अपनी मोहरें बोई थीं। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहाँ कुछ भी नहीं था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हुआ। पेड़ निकले क्यों नहीं? अचानक उसे अपने सिर पर किसी के ज़ोरों के हँसने की आवाज़ आई। उसने ऊपर देखा

तो एक पेड़ की डाली पर एक बड़ा-सा तोता बैठा हँस रहा था, और अपने पंख साफ कर रहा था। पिनोकियो ने नाराज़ होकर उससे कहा, ''क्यों, तुम क्यों हँस रहे हो?''

''मुझे उन मूर्खों पर हँसी आ रही है जो दूसरों की हर बात पर विश्वास कर लेते हैं।''

''क्या तुम्हारा मतलब मुझसे है?''

''हाँ, मैं तुम्हें ही कह रहा हूँ पिनोकियो, भला तुमने यह कैसे मान लिया कि गेहूँ, चने की तरह मोहरों के उगने की उम्मीद है?''

''साफ-साफ कहो न!'' पिनोकियो ने घबराते हुए कहा।

''हाँ, हाँ, कह रहा हूँ। सुनो। जब तुम शहर में थे तब इधर लोमड़ी और बिल्ली यहाँ चुपचाप आईं और तुम्हारी मोहरें खोदकर नौ दो ग्यारह हो गईं। अब कोई उन्हें पकड़ ले तो मैं मानूँ कि वह दुनिया का सबसे चालाक आदमी है।''

यह सुनकर पिनोकियो का मुँह खुला का खुला रह गया। उसे उन दोनों पर बड़ा गुस्सा आया। वह दौड़ता हुआ बौड़म नगर में पहुँचा। उसने जाकर अदालत में शिकायत की।

उस समय न्यायाधीश के आसन पर एक बड़ा भारी बन्दर बैठा था। वह काफी बूढ़ा था। उसकी दाढ़ी पक आई थी। पिनोकियो ने बड़े अदब के साथ अपना क़िस्सा बयान किया। उसने अपराधियों के नाम बताए और फिर न्याय की माँग की।

जज साहब बड़े ध्यान से उसकी बातें सुनते रहे। जब पिनोकियो चुप हो गया तब उन्होंने घण्टी बजाकर दो सिपाहियों को बुलवाया। फौरन दो बड़े-बड़े खूँखार कुत्ते सिपाहियों के वेश में वहाँ आ खड़े हुए। आते ही उन्होंने जज साहब को सलाम किया। बन्दर कठपुतले की ओर इशारा करके बोला, ''इस बेवकूफ की मोहरें चुरा ली गई हैं। इसलिए इसे फौरन गिरफ्तार कर लो और जेल में डाल दो!''

सज़ा सुनकर कठपुतले की जान सूख गई। उसने इसके विरोध में कुछ कहना चाहा, लेकिन कुत्तों ने उसका मुँह बन्द कर दिया और खींचते हुए उसे फौरन अदालत से बाहर ले आए।

पिनोकियो को चार महीने की सज़ा हुई। उसे चार महीने जेल में काटने पड़े। अगर एक घटना न हो जाती तो वह शायद बाद में भी न छोड़ा जाता। असल में हुआ यह कि बौड़म नगर का बादशाह कहीं से लड़ाई जीतकर लौटा। जीत की खुशी में उसने बड़ी धूमधाम की और सभी क़ैदियों को छोड़ दिया गया।

जेल से निकलकर पिनोकियो इतना खुश हुआ, इतना खुश हुआ कि कुछ न पूछो। उसने वही सड़क पकड़ी जो सीधी जंगल से होकर परी के महल को जाती थी। बरसात के दिन थे, इसलिए सड़क पर बहुत कीचड़ था। बार-बार वह कीचड़ में धंस जाता था। लेकिन फिर भी रुकने का नाम नहीं लेता था। वह अपने पापा और अपनी छोटी बहिन से मिलने के लिए बहुत उतावला था। बार-बार वह सोचता था, 'मैंने घर से बाहर भागकर जो गलती की थी उसकी कितनी सज़ा भोगनी पड़ रही है! लेकिन यह सज़ा मुझे मिलनी ही चाहिए थी, क्योंकि मैं किसी का कहना नहीं मानता। मैं कितना खराब लड़का हूँ! मैंने परी के सामने भी झूठ बोला। और वह मेरी छोटी बहिन है। अब मैं लौटकर जाऊँगा तो उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करूँगा, क्योंकि उसने मेरी जान बचाई है, और मेरी इतनी मदद की है।'

इसी तरह सोचते-साचते वह आगे बढ़ा जा रहा था। अचानक ठिठककर वह खड़ा रह गया। यह क्या है? और वह चार कदम पीछे हट गया। सामने सड़क पर एक बड़ा भारी साँप रास्ता रोके पड़ा था। उसका रंग हरा था, आँखें लाल थीं और उसकी काँटेदार पूँछ से धुआँ निकल रहा था। वह दौड़कर पास ही पत्थर के एक ढेर पर चढ़ गया। वहीं बैठे-बैठे वह साँप के वहाँ से जाने का इन्तज़ार करने लगा।

जब बहुत देर हो गई तो पिनोकियो ने कुछ हिम्मत बाँधी। उसने और मधुरता से कहा, "सर्पराज, आप तो जानते हैं कि मैं अपने घर जा रहा हूँ। मेरे पापा मेरी राह देख रहे होंगे। वहाँ मेरी एक छोटी-सी बहिन भी है जो जंगल की रानी है। क्या आप मुझे थोड़ा-सा रास्ता देंगे?"

यह कहकर वह जवाब का इन्तज़ार करने लगा। लेकिन साँप तो हिला तक नहीं। उलटे उसने अपनी आँखें मूँद लीं।

अरे, क्या यह मर गया? पिनोकियो ने खुश होते हुए सोचा। अब वह आसानी से आगे बढ़ सकता था। लेकिन जैसे ही वह साँप के पास पहुँचा, साँप उछलकर खड़ा हो गया। पिनोकियो घबराकर उल्टे पैर भागा, लेकिन उसके पैर लड़खड़ा गए और वह कीचड़ में आ गिरा।

और वह गिरा कैसे? बिलकुल औंधे मुँह। उसका सिर कीचड़ में धंस गया और पैर हवा में छटपटाने लगे।

उसकी यह दशा देखकर साँप हँस पड़ा। क्या हँसी थी वह भी! हवा में पिनोकियो की छटपटाती हुई टाँगों को देखकर उसकी हँसी नहीं थम रही थी। हँसते-हँसते वह लोट-पोट हो रहा था। वह इतना हँसा कि उसकी छाती की नस फट गई और वह मर गया।

पिनोकियो किसी तरह कीचड़ से उठा। जब उसने देखा कि साँप सचमुच मर गया, तो वह उसके पास से होता हुआ तेज़ी से भाग निकला। लेकिन कुछ दूर जाने पर ही उसे बहुत ज़ोरों की भूख लग आई। उसने देखा कि पास ही एक बगीचे में अंगूर के गुच्छे लटक रहे हैं। वह अंगूर तोड़ने के लिए जैसे ही आगे बढ़ा कि खट्-खटाक् उसके पैर किसी चीज़ में फँस गए। वह इतनी ज़ोर से नाक के बल ज़मीन पर गिरा कि उसकी आँखों के आगे तारे नाचने लगे। पैरों में बुरी तरह से ऐंठन हो रही थी। असल में उसके पैर लोहे के एक जाल में फँस गए थे। यह जाल एक किसान ने उन जंगली बिल्लियों को पकड़ने

के लिए लगाया था जो अक्सर रात में चोरी से आती थीं और उसकी मुर्गियाँ पकड़ ले जाती थीं।

पिनोकियो ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और रोने लगा। लेकिन वहाँ कौन था जो उसकी पुकार सुनता! खेत सुनसान पड़े थे और उस सड़क से शाम को कोई नहीं गुज़रता था। धीरे-धीरे रात होने लगी।

इतने में जुगनू चमकता हुआ उसके सिर पर मँडराने लगा। उसने उससे कहा, "जुगनू भाई ज़रा मुझ पर दया करो। किसी तरह यहाँ से छुड़वा दो !"

"लेकिन तुम यहाँ कैसे फँस गए!"

"मैं ज़रा अंगूर तोड़ने आया था।"

"तुम्हें यह किसने सिखाया कि दूसरे का माल चुराओ?"

"मुझे भूख लगी थी।"

"लेकिन भूख की वजह से दूसरे का माल तो नहीं चुराना चाहिए।"

"हाँ, हाँ, यह ठीक है।" पिनोकियो रोते हुए बोला, "अब मैं कभी ऐसा काम नहीं करूँगा, लेकिन इस समय तो..."

इतने में झाड़ी में किसी के पैरों की आहट सुनाई दी। वह किसान था और यह देखने के लिए आया था कि कोई बिल्ली फँसी या नहीं। उसने अपने कोट में एक लालटेन छिपा रखी थी। पास आते ही उसने लालटेन बाहर निकालीं बिल्ली की जगह एक लड़का फँसा हुआ देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह गुस्से में चीखकर बोला, "क्यों रे चोर, आज पकड़ में आ गया बच्चू! तुम्हीं मेरी मुर्गियाँ चुराया करते थे!"

"नहीं, नहीं, मैं चोर नहीं हूँ! मैं तो सिर्फ अंगूर के दो गुच्छे तोड़ने आया था!" पिनोकियो ने सिसकते हुए कहा।

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं! जो अंगूर चुरा सकता है, वह मुर्गी भी चुरा सकता है। मैं तुम्हें ऐसी सज़ा दूँगा कि हमेशा याद रखोगे।" यह कहकर

किसान ने उसके पैर शिकंजे से छुड़ाए और उसे घसीटते हुए अपने घर ले गया। घर ले जाकर उसे ज़मीन पर पटक दिया और कहा, "आज अब बहुत रात हो गई है। कल मैं तुम्हारा फैसला करूँगा। लेकिन जो कुत्ता मेरे यहाँ रखवाली करता है, आज तुम्हें उसका काम करना पड़ेगा। समझे न?" यह कहकर उसने पिनोकियो के गले में पीतल का एक बड़ा भारी पट्टा डाल दिया और उसे कीलों से कस दिया। फिर एक ज़ंजीर से बाँधकर उसे दीवार में बाँध दिया।

फिर उसने कहा, "अगर रात में पानी बरसे तो तुम उस डिब्बे में घुस जाना जिसमें मेरा कुता आज चार साल से रहता आया है। अगर रात में कहीं चोर-डाकू आएँ तो भौंकना मत भूलना। अच्छा, अब सवेरे मैं तुम्हारी खबर लूँगा।"

और किसान दरवाज़ा बन्द करके सो गया। बेचारा पिनोकियो बाहर जाड़े की रात में भूखा-प्यासा पड़ा रहा। बार-बार वह अपने पट्टे को टटोलता था। लेकिन वह इतना मज़बूत था कि उससे निकल पाना असम्भव था। थोड़ी ही देर बाद वह थककर सोने के लिए कुत्ते के डिब्बे में चला गया। ज़रा-सी देर में उसे नींद आ गई। करीब दो घण्टे तक वह सोता रहा।

अचानक आधी रात के समय कुछ आवाज़ सुनकर उसकी नींद खुल गई। उसने धीरे-से डिब्बे के बाहर गर्दन निकालकर देखा। बाहर आँगन में काली-काली जंगली बिल्लियाँ खड़ी थीं और आपस में कुछ सलाह कर रही थीं। इतने में एक बिल्ली उसके डिब्बे के पास आकर धीरे से बोली, "सलाम, भैया मेलाम्पो।"

"मेरा नाम मेलाम्पो नहीं है।" कठपुतले ने जवाब दिया।

"आंय ? कौन हो जी तुम ?"

"मैं पिनोकियो हूँ।"

"यहाँ क्या कर रहे हो तुम?"

"आज मैं कुत्ते की जगह तैनात हूँ।"

"हमारा मेलाम्पो कहाँ गया! इसी डिब्बे में रहता था।"

"वह आज सवेरे मर गया।"

"हाय, मर गया? बड़ा अच्छा कुत्ता था, बेचारा! लेकिन तुम्हारी शकल से लगता है कि तुम भी कोई बुरे कुत्ते नहीं हो।"

"माफ कीजिएगा, क्या कह रही हैं आप! मैं कुत्ता नहीं हूँ।"

"कुत्ते नहीं हो, तो भला कौन हो तुम?"

"मैं तो एक कठपुतला हूँ।" पिनोकियो ने गर्व से कहा।

"तो ठीक है, हमारा-तुम्हारा भी वही समझौता रहेगा जो मेलाम्पो के साथ था और तुम जानते ही हो कि हम बहुत ईमानदार बिल्लियाँ हैं। हम समझौता कभी नहीं तोड़तीं।"

"कैसा समझौता?"

"यही कि हफ्ते में एक रात तुम हमको इस किसान के अहाते में आने दोगे और आठ मुर्गियाँ ले जाने दोगे। इन आठ मुर्गियों में से सात हम खाएँगी और एक तुम्हें दे देंगी। लेकिन शर्त यह है कि तुम आँख मूँदे चुपचाप पड़े रहोगे और अपने मालिक को नहीं जगाओगे।"

"क्या मेलाम्पो नाम का जो कुत्ता यहाँ पहले रहता था वह यही करता था?"

"और क्या, और हमारी उससे खूब पटती थी। हम एक बढ़िया-सी मुर्गी मारकर इस डिब्बे में रख देते थे। अच्छा, तो हमारा समझौता पक्का रहा न?"

"हाँ-हाँ, बिल्कुल पक्का।" पिनोकियो ने सिर हिलाकर कहा। वह मन ही मन मुस्कराने लगा। बिल्लियाँ खुशी-खुशी उस अहाते की तरफ चल पड़ी जहाँ किसान की मुर्गियाँ रहती थीं। लेकिन जैसे ही वे अहाते में घुसी कि पिनोकियो ने चुपके से जाकर दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर वह किसान के कमरे के पास जाकर कुत्ते की नकल करके

भौंकने लगा। किसान फौरन बाहर निकल आया। उसके हाथ में एक बन्दूक थी। उसने पूछा, "क्या बात है?"

"डाकू आए हैं। चार बिल्लियाँ मुर्गी पकड़ने गई हैं।" पिनोकियो ने कहा।

"अच्छा, मैं अभी मज़ा चखाता हूँ।" यह कहकर किसान एक खाली बोरी लेकर मुर्गियों के बाड़े में घुस गया। थोड़ी ही देर में उसने चारों बिल्लियों को पकड़कर बोरे में बन्द कर दिया।

फिर उसने पिनोकियो की पीठ ठोकते हुए उससे सारा क़िस्सा पूछा। पिनोकियो ने उसे बता दिया कि उसके पुराने कुत्ते ने बिल्लियों से क्या समझौता कर रखा था। किसान ने उसे डाँटते हुए कहा, "क्या बकते हो, मेरा कुत्ता इतना स्वामीभक्त था कि कुछ न पूछो, भला ऐसा कैसे हो सकता है कि बिल्लियाँ मेरी मुर्गियाँ चुराती रहें और वह आँख मूँदें चुपचाप पड़ा रहे? लेकिन खैर, मुझे खुशी है कि तुमने आज इन बिल्लियों को पकड़ लिया। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। जाओ, तुम्हें छोड़ देता हूँ।"

और किसान ने पिनोकियो को माफ कर दिया।

7

जैसे ही पिनोकियो को किसान के यहाँ से छुट्टी मिली, वह दौड़ता हुआ सड़क पर आ गया और सीधा जंगल की ओर चल पड़ा। जब वह उस पेड़ के पास पहुँचा जहाँ उसे फाँसी पर लटकाया गया था तो एक बार काँप उठा। उसे अब भी डर लग रहा था कि झाड़ी

के पीछे से कोई निकलकर उसे पकड़ न ले। कुछ और आगे बढ़कर वह चारों ओर नज़र दौड़ने लगा, लेकिन परी का महल न जाने कहाँ गायब हो गया था। उसे कुछ घबराहट होने लगी। ऐसा कैसे हो सकता है कि जंगल की परी का महल ही गायब हो जाए। लेकिन बात सच थी। जब वह उस खुले मैदान में पहुँचा, जहाँ परी का महल बना हुआ था, तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि महल सचमुच गायब हो गया, उसकी जगह एक चबूतरा बना था और उस पर संगमरमर का एक पत्थर जड़ा था। पत्थर पर लिखा था :

"यहाँ वह नीली आँखों वाली लड़की चिरनिद्रा में सो रही है, जो इस दुःख में रो-रोकर मर गई कि उसका छोटा भाई पिनोकियो उसे छोड़कर न मालूम कहाँ चला गया।" जब उस अभागे कठपुतले ने यह पढ़ा तो उसे कितना दुःख हुआ होगा, इसका अन्दाज़ आसानी से लगाया जा सकता है। वह पछाड़ खाकर पत्थर पर गिर पड़ा और उससे लिपट-लिपटकर रोने लगा। रात-भर वह आँसू बहाता रहा। उसने अपनी बहिन की क़ब्र पर इतने आँसू बहाए कि जब सवेरा हुआ तो उसकी आँखों के सारे आँसू खत्म हो गए। वह अब भी फूट-फूटकर रो रहा था और ज़ोर-ज़ोर से सिसक रहा था।

उसे बार-बार उस अपनी नन्हीं-सी बहिन की याद आती थी जो इस जंगल की रानी थी और उसे इतना मानती थी। उसे यह भी नहीं पता था कि उसका पिता जेपेत्तो अब कहाँ है और क्या कर रहा है। इतने बड़े संसार में अब वह बिलकुल अकेला था, यह सोचकर उसने फिर से रोना शुरू किया। लेकिन उसके सारे आँसू खत्म हो चुके थे। इसलिए ज़्यादा देर रो नहीं सका।

इतने में एक बड़ा-सा कबूतर उसके सिर पर मँडराने लगा। उसने रुककर पिनोकियो से पूछा, "क्यों भाई लड़के, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

"देखते नहीं, मैं रो रहा हूँ।" पिनोकियो ने अपनी आँखें पोंछते हुए ऊपर देखकर कहा। कबूतर कुछ और नीचे उतर आया। उसने पूछा, "अच्छा, यह बताओ, तुम पिनोकियो नाम के किसी कठपुतले को जानते हो?"

"पिनोकियो। वाह, मैं ही तो हूँ पिनोकियो।" कठपुतले ने फौरन खड़े होकर कहा।

यह सुनकर कबूतर ज़मीन पर उतर आया। वह बड़ा भारी था। उसने अपनी आँखें नचाकर पूछा, "अच्छा, तुम जेपेत्तो को जानते हो ?"

"भला यह भी कोई सवाल है। वे तो मेरे पापा हैं। बताओ, तुम्हें यह सब कहाँ मालूम हुआ? क्या पापा ने ही तुम्हें यहाँ भेजा है? बताओ, वे इस समय कहाँ हैं, जल्दी बताओ।"

"तीन दिन पहले मैंने उसे समुद्र के किनारे देखा था।"

"वहाँ क्या कर रहे थे?"

"वहाँ वह समुद्र पार करने के लिए एक छोटी-सी नाव बना रहा था। क्योंकि तीन महीने हो गए, तुम्हें घर से भागे हुए। वह तुम्हें दुनिया-भर में ढूँढता फिरा है। जब तुम नहीं मिले तो उसने तय किया कि दूसरे देशों में जाकर अब तुमको खोजना चाहिए।"

"समुद्र का किनारा यहाँ से कितनी दूर है?" पिनोकियो ने फौरन पूछा।

"छः सौ मील से कुछ ज़्यादा। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा देता हूँ। आओ, मेरे पंखों पर बैठ जाओ।"

"हाँ चलो, इतनी कृपा मुझ पर कर दो।" और पिनोकियो कबूतर की पीठ पर सवार हो गया। कबूतर उसे लेकर चला। दिन-भर वह उड़ता रहा। शाम को कबूतर कहने लगा, "मुझे प्यास लगी है।"

"और मुझे बहुत ज़ोर की भूख लगी है।" पिनोकियो ने कहा।

दोनों एक जगह उतर गए। वहाँ एक तसले में पानी भरा हुआ था और दूसरे तसले में कबूतरों के लिए कुछ दाना रखा था। पिनोकियो को इतनी तेज़ भूख लगी थी कि वह उसी दाने को खाने लगा। भूख के कारण वह दाना भी उसे बहुत अच्छा लग रहा था। खा-पीकर दोनों फिर से उड़ चले। सवेरा होते-होते वे समुद्र के किनारे पहुँच गए। उस समय किनारे पर लोगों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। सब लोग चिल्ला रहे थे और समुद्र की ओर इशारा कर रहे थे। पिनोकियो ने एक बुढ़िया से पूछा, ''क्या बात है, यहाँ क्या हो रहा है?''

बुढ़िया बोली, ''एक आदमी, जिसका लड़का उसे छोड़कर न मालूम कहाँ चला गया, उसे खोजने के लिए अपनी छोटी-सी नाव में यात्रा पर निकला है। आज मौसम बहुत खराब है। समुद्र में बहुत तूफान उठा हुआ है। उस आदमी की नाव खतरे में पड़ गई है।''

''वह नाव कहाँ है?'' पिनोकियो ने घबराकर पूछा। बुढ़िया ने उँगली से इशारा कर दिया। पिनोकियो ने उधर देखा तो सचमुच एक छोटी-सी नाव लहरों पर थपेड़े खा रही थी। उसमें एक आदमी बैठा हुआ था। पिनोकियो ने फौरन उसे पहचान लिया। चिल्लाने लगा, ''अरे, वे तो पापा हैं। पापा! पापा! पापा!''

नाव कभी दिखाई देती थी और कभी लहरों के बीच छिप जाती थी। पिनोकियो एक चट्टान पर चढ़ गया और अपने पापा को आवाज़ लगाने लगा। वह बार-बार अपनी टोपी और रूमाल हिलाकर अपने पापा का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करने लगा। नाव बहुत दूर थी लेकिन शायद जेपेत्तो ने अपने लड़के को पहचान लिया था। वह कोशिश करके नाव को किनारे की ओर मोड़ने लगा। अचानक एक बहुत बड़ी लहर उठी और नाव न मालूम कहाँ गायब हो गई। लोगों ने बहुत देर तक इन्तज़ार किया। लेकिन नाव फिर

दिखाई ही नहीं दी। किनारे पर खड़े हुए मछुए कहने लगे, ''भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे। बेचारा!''

पिनोकियो ज़ोर से चीख पड़ा, ''मैं अपने पापा को बचाऊँगा!''

वह चट्टान से नीचे उतर आया और समुद्र में कूद पड़ा। वह लकड़ी का बना था इसलिए डूब नहीं सकता था। वह मछली की तरह तैरता हुआ आगे बढ़ने लगा। कभी वह लहरों में छिप जाता था और कभी उसका सिर पानी के ऊपर दिखाई दे जाता था। लेकिन थोड़ी देर बाद वह इतनी दूर निकल गया कि किनारे पर खड़े हुए लोगों की आँखों से ओझल हो गया। मछुओं ने कहा, ''बेचारा लड़का!'' और फिर वे भगवान का नाम लेकर घर लौट गए।

पिनोकियो ने रुकने का नाम नहीं लिया। वह तैरता ही रहा। यहाँ तक कि उसने पूरी रात तैरते-तैरते काट दी। उसने सोचा कि शायद इस तरह मैं अपने पापा को बचा लूँगा। बड़ी भयानक रात थी वह। खूब तेज़ी से पानी बरस रहा था। रह-रहकर बिजली चमकती थी। दो-एक ओले भी गिरे। सवेरा होते-होते पिनोकियो ने देखा कि वहाँ से कुछ दूर ही ज़मीन थी। वह समुद्र के बीच बने हुए एक टापू का किनारा था।

उसने किनारे पर पहुँचने की बहुत कोशिश की। लेकिन लहरों के धक्के से वह बार-बार बह जाता था। अन्त में एक बड़ी लहर आई उसे किनारे की ओर खींच ले गई। एक ही झटके में वह इतनी ज़ोर से बालू पर जा गिरा कि अंजर-पंजर ढीले हो गए।

अब तक तूफान निकल गया था। समुद्र की लहरें शान्त हो गई थीं। पिनोकियो धूप में अपने कपड़े सुखाने लगा। बार-बार वह समुद्र की ओर देखता था। लेकिन दूर तक कहीं उसे कोई नाव नहीं दिखाई देती थी! अपने मन में वह सोचने लगा, ''पता नहीं, मैं किस टापू पर खड़ा हूँ। यहाँ भले लोग रहते हैं या जंगली, यह भी मुझे

नहीं मालूम। आस-पास कोई दिखाई भी नहीं देता कि उससे कुछ पूछा जाए।''

बहुत देर तक अकेले बैठे रहने पर वह इतना ऊब गया कि उसे रुलाई छूटने लगी। इतने में अचानक उसने देखा कि एक बड़ी-सी मछली अपना मुँह पानी से बाहर निकाले हुए किनारे के पास ही तैर रही थी। पिनोकियो ने उसे आवाज़ दी।

''मछली देवी, मछली देवी, ज़रा एक बात पूछूँ ?''

वह मछली देखने में जितनी डरावनी थी उतनी ही सीधी थी। वह बोली, ''हाँ, हाँ, एक क्यों, दो पूछो!''

''क्या आप मेहरबानी करके मुझे बताएँगी कि इस टापू पर कोई ऐसा भी गाँव है जहाँ बिना जान गँवाए खाना मिल जाए?''

मछली बोली, ''हाँ, हाँ, यहाँ से अपनी नाक की सीध में चले जाओ। तुम्हें एक गाँव मिलेगा!''

''अच्छा, दूसरी बात यह है कि आप तो रात-दिन समुद्र में घूमती रहती हैं, कहीं छोटी-सी नाव में बैठे हुए मेरे पापा को देखा है?''

''कैसे हैं तुम्हारे पापा?''

''मेरे पापा दुनिया में सबसे अच्छे पापा हैं और मैं दुनिया का सबसे खराब लड़का हूँ।''

मछली बोली, ''तूफान के समय हो सकता है, तुम्हारे पापा की नाव डूब गई हो या कोई मछली उसे निगल गई हो! यहाँ बहुत बड़ी-बड़ी मछलियाँ रहती हैं। उनमें एक 'कुत्ता-मछली' होती है। यह इतनी बड़ी होती है जैसे कोई पाँचमंज़िला मकान हो! उसका मुँह इतना बड़ा होता है कि एक पूरी की पूरी रेलगाड़ी मय इंजन और डिब्बों के समा जाए।''

''हे भगवान!'' पिनोकियो ने घबराकर जल्दी-जल्दी कपड़े

पहनते हुए कहा, ''अच्छा, धन्यवाद, आपने मेरी बड़ी मदद की।'' यह कहकर वह सीधे अपनी नाक की सीध में भाग निकला।

दौड़ते-दौड़ते वह एक छोटे-से गाँव में पहुँचा जिसका नाम था 'मेहनती मक्खियों का गाँव'। उस शहर में सब लोग अपने-अपने काम में लगे थे। कोई इधर भाग रहा था, कोई उधर। किसी को

दम मारने की फुरसत नहीं थी। पिनोकियो को अपने जैसा आलसी आदमी तो कोई दिखाई ही नहीं दिया। उसे बड़ी भूख लगी हुई थी। लेकिन अब क्या किया जाए। इस अनजान नगरी में किससे रोटी माँगी जाए। यहाँ खाना मिलने के दो ही रास्ते थे, या तो भीख माँगो या काम माँगो। पिनोकियो को भीख माँगना बहुत बुरा लगता था। वह इस काम को बुरा मानता था। इसीलिए उसने काम ढूँढने का निश्चय किया। इतने में उधर से एक आदमी निकला। वह बुरी तरह हाँफ रहा था और अकेला ही लकड़ी के कोयले से लदी दो गाड़ियाँ खीच रहा था। पिनोकियो को लगा कि यह आदमी शायद दयालु है। चलो, उससे दो पैसे माँग लें। उसने पास जाकर उससे भीख माँगी। वह आदमी बोला, ''दो पैसे क्या, मैं तुम्हें दो आने दे सकता हूँ। लेकिन ज़रा गाड़ी खींचने में मेरी मदद कर दो।''

पिनोकियो ने बिगड़कर कहा, ''बड़े ताज्जुब की बात है। साफ-साफ सुन लो, मैं गधे का काम करने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैंने कभी गाड़ी खींचने का काम नहीं किया।''

वह आदमी उसे घूरकर देखता हुआ आगे बढ़ गया। इसी तरह आधे घण्टे में करीब बीस आदमियों से पिनोकियो ने भीख माँगी। लेकिन सभी उसे यह कहकर आगे बढ़ गए :

''तुम्हें भीख माँगते हुए शरम नहीं आती? जाओ, कुछ काम करो।''

अन्त में उसे एक स्त्री आती हुई दिखाई दी जो पानी की दो बाल्टियाँ लिए हुए थी। पिनोकियो ने उससे पानी माँगा। वह स्त्री अच्छे स्वभाव की थी। उसने पानी पिला दिया। पानी पीकर पिनोकियो ने धीरे-से कहा, ''मेरी प्यास तो मिट गई, इसी तरह अगर मेरी भूख भी मिट जाती तो...।''

वह स्त्री हँसकर बोली, ''तुम मेरी एक बाल्टी घर पहुँचवा दो

तो मैं तुम्हें भरपेट खाना खिलाऊँगी।''

पिनोकियो को यह अच्छा नहीं लगा। लेकिन इसके सिवा और कोई रास्ता भी नहीं था। उसने बाल्टी उठा ली। बाल्टी बहुत भारी थी, इसलिए उसे सिर पर उठाकर उस स्त्री के साथ चल पड़ा।

घर पहुँचकर उस भली स्त्री ने उसके सामने खाना परोस दिया। पिनोकियो खाने पर टूट पड़ा। वह खाना खाने में इतना मशगूल था कि उसने उस स्त्री की तरफ ध्यान से देखा भी नहीं। जब उसने खूब कसकर खाना खा लिया तो अपनी गर्दन उठाई। उस स्त्री की ओर देखा तो देखता ही रह गया। वह उसे पहचानने की कोशिश कर रहा था। अचानक वह उठकर उस स्त्री के पैरों से लिपटकर रोने लगा, ''तुम मुझे मिल गईं, तुम्हीं हो वह...हाँ, वही आवाज़...वही नीली आँखें...बहिन...क्या तुम मुझे नहीं पहचानतीं?...हाय, मैं तुम्हारे लिए कितना रोया हूँ।''

पहले तो वह स्त्री चुप रही, लेकिन बाद में उसकी आँखों में आँसू आ गए। यह वही जंगल की परी थी। अब वह बड़ी हो गई थी, काफी बड़ी और पिनोकियो की माँ-सी लगती थी। वह पिनोकियो के सिर पर प्यार से हाथ फेरने लगी। पिनोकियो ने उससे पूछा, ''बहिन तुम इतनी बड़ी कैसे हो गईं? मैं तो अभी एक सूत भी नहीं बढ़ा।''

''तुम कैसे बढ़ सकते हो? कठपुतले बढ़ते नहीं। तुम ऐसे ही रहोगे।''

''नहीं, नहीं, मैं कठपुतला नहीं रहना चाहता। इस ज़िन्दगी से मेरा जी ऊब गया है। मैं अब आदमी बनना चाहता हूँ।...'' पिनोकियो ने सिसकते हुए कहा।

''हाँ, तुम आदमी बन सकते हो। लेकिन तुम बन नहीं पाओगे। क्योंकि आदमी बनने के लिए अच्छा लड़का बनना पड़ता है। बड़ों का कहना मानना पड़ता है। सच बोलना पड़ता है, पढ़ने में और

दूसरे काम-काज में मन लगाना पड़ता है।''

''लेकिन, बहिन, पढ़ने से मेरा जी ऊबता है। सारे बदन में दर्द होने लगता है। लेकिन अच्छा, तुम कह रही हो, तो मैं वादा करता हूँ कि मैं अच्छा लड़का बनूँगा और स्कूल में पढ़ने जाऊँगा। मैं जल्दी से जल्दी कठपुतले का जीवन छोड़कर एक लड़का बनना चाहता हूँ।''

दूसरे दिन पिनोकियो सरकारी स्कूल में पढ़ने गया।

स्कूल के लड़कों ने जब देखा कि यह कठपुतला उनके बीच पढ़ने आया है तो उन्हें शरारत का एक नया मौका मिला। वे लोग उसे छेड़ने लगे। पहले तो पिनोकियो कुछ नहीं बोला, लेकिन जब लड़कों ने उसे बहुत तंग किया तो उसने एक लड़के को ठोकर मार दी और दूसरे को कुहनी से धक्का दे दिया। वे दोनों दर्द से चीख पड़े, ''हाय, इसका पैर कितना कड़ा है!'' ''ओह, कुहनी है कि पत्थर!''

अब लड़कों को उसे फिर छेड़ने की हिम्मत नहीं हुई। धीरे-धीरे सभी उसके दोस्त बन गए। यहाँ तक कि गुरुजी भी उसकी प्रशंसा करने लगे। धीरे-धीरे ऐसे लड़के भी उसके दोस्त बनने लगे जिनका मन पढ़ने में नहीं लगता था। गुरुजी ऐसे लड़कों से दूर रहने को कहते थे। लेकिन पिनोकियो इसकी परवाह नहीं करता था।

एक दिन रास्ते में पिनोकियो को उसके कुछ दोस्त मिले और कहने लगे, ''पिनोकियो, पिनोकियो, एक खुशखबरी सुनोगे! समुद्र में आज कुत्ता-मछली निकली है, बिल्कुल पहाड़ जैसी। चलो, देखने चला जाए। हम लोग जा रहे हैं, तुम भी आओ।''

लेकिन पिनोकियो ने उन्हें मना कर दिया और कहा, ''नहीं गुरुजी मना करते हैं।''

''अरे इस बुड्ढे को तो इसीकी तनख्वाह मिलती है। आओ चलो, अभी एक घण्टे-भर में लौट आएँगे।''

पिनोकियो राज़ी हो गया। सब लोग समुद्र के किनारे की ओर दौड़ गए। पिनोकियो उनमें सबसे आगे था, क्योंकि वह सबसे तेज़ दौड़ता था। लेकिन जब वह समुद्र के किनारे पहुँचा तो वहाँ न कुत्ता-मछली थी न कुछ और। उसने अपने साथियों से पूछा, ''मछली कहाँ गई?'' वे लोग हँसकर बोले, ''यहीं कहीं होगी या नाश्ता करने गई होगी!''

उनका यह व्यवहार देखकर पिनोकियो को बड़ा आश्चर्य हुआ। असल में वे लोग उसे पढ़ाई से भगाना चाहते थे। इसलिए झूठ-मूठ यहाँ ले आए थे। पिनोकियो को जब यह मालूम हुआ तो उसे बड़ा गुस्सा आया। लेकिन वह अकेला था और वे कई थे। उन्होंने उसका मज़ाक़ बनाना शुरू किया। बातचीत आगे बढ़ गई। वे लोग मारपीट पर उतर आए। पिनोकियो ने भी उन्हें पीटना शुरू किया। वे लोग उस पर अपनी मोटी किताबें फेंकने लगे। एक लड़के ने गणित की एक मोटी किताब पिनोकियो पर फेंकी। लेकिन पिनोकियो बच गया। उसने वही किताब उठाकर एक लड़के के सिर पर दे मारी, लड़का एक चीख मारकर वहीं ढेर हो गया। सचमुच गणित की किताब बहुत भारी थी।

अपने एक साथी को मरते देखकर बाकी लड़के भाग निकले। लेकिन पिनोकियो वहीं खड़ा रहा। अब उसे बड़ा पछतावा हो रहा था कि क्यों मैं इन बदमाश लड़कों के साथ यहाँ आया। गुरुजी ने मुझे इनके साथ रहने को मना किया था। फिर वह अपना रूमाल पानी में भिगोकर उस लड़के को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

इतने में न मालूम कहाँ से दो सिपाही वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने पिनोकियो को डाँटकर कहा, ''क्यों जी, क्या कर रहे हो तुम? कौन यहाँ पड़ा है? इसको क्या हुआ?''

''सिपाहीजी, यह मेरे साथ पढ़नेवाला एक लड़का है। इसे चोट आ गई है। मैं इसकी मदद कर रहा हूँ।''

''इसे कैसे चोट आई ?''

''इस किताब से चोट आई!''

''यह किताब किसकी है, तुम्हारी? चलो, हमारे साथ तुम्हें थाने चलना पड़ेगा!''

''नहीं, नहीं, मैंने क्या किया है! मैं बिलकुल निर्दोष हूँ!''

''लेकिन सिपाही नहीं माने। उन्होंने पिनोकियो को गिरफ्तार कर लिया। वे लोग उसे खींचकर थाने ले जाने लगे। कुछ दूर आगे जाने पर अचानक हवा का झोंका आया और पिनोकियो की टोपी उड़ गई। उसने कहा, ''अरे सिपाहीजी, हुज़ूर, ज़रा ठहरिए। मैं अपनी टोपी ले आऊँ।''

''जाओ, जल्दी से लाओ।'' पिनोकियो दौड़कर अपनी टोपी के पास गया। लेकिन वापस लौटने की बजाय वह वहाँ से भाग निकला। सिपाहियों ने जब उसको भागते देखा तो अपना शिकारी कुत्ता उसके पीछे छोड़ दिया। दोनों बहुत तेज़ भागने वाले थे। उनके दौड़ने से इतनी धूल उड़ रही थी कि राहगीरों की समझ में नहीं आया कि क्या बात है।

पिनोकियो भागता रहा और कुत्ता उसका पीछा करता रहा। भागते-भागते पिनोकियो समुद्र के किनारे जा पहुँचा। कुत्ता उसके बहुत पास आ गया था। वह घबराकर समुद्र में कूद पड़ा। कुत्ता भी अपने को नहीं रोक पाया और उसके पीछे-पीछे समुद्र में कूद गया। लेकिन थोड़ी ही देर में वह डूबने लगा। उसने चिल्लाकर पिनोकियो से मदद माँगी। पिनोकियो को उस पर दया आ गई। उसने उसकी जान बचा ली। कुत्ता उसे सलाम करके घर लौट गया और जाते-जाते कह गया, ''पिनोकियो तुमने मुझ पर बड़ी मेहरबानी

की है। अगर कभी ज़रूरत पड़े, तो मुझे बुला लेना।''

पिनोकियो पानी में से निकलकर मछुओं के गाँव की तरफ चल पड़ा। वहाँ उसे मालूम हुआ कि जो लड़का कल घायल हुआ था वह मरा नहीं, चोट भी उसे बहुत कम आई थी और वह ठीक होकर अपने घर लौट गया था। वहाँ से वह परी के घर की ओर

लौट चला। रात हो गई थी। बड़ी तेज़ आँधी चल रही थी। थोड़ी देर बाद पानी भी बरसने लगा। जब पिनोकियो परी के घर पहुँचा तो उसे दरवाज़ा खटखटाने की हिम्मत न हुई। करीब आधे घण्टे तक वह वहीं खड़ा रहा। फिर धीरे-से उसने दरवाज़ा खटखटाया। मकान की चौथी मंज़िल से एक घोंघे ने झाँका। उसके सिर पर मोमबत्ती रखी हुई थी। पिनोकियो ने दरवाज़ा खोलने को कहा। घोंघे ने ऊपर से जवाब दिया, "अच्छा, अच्छा, तुम हो! मैं अभी आकर दरवाज़ा खोलता हूँ। लेकिन जल्दबाज़ी मत करो। तुम जानते हो कि मैं घोंघा हूँ और घोंघे किसी काम में जल्दी नहीं करते। यह कहकर उसने खिड़की बन्द कर दी। करीब एक घण्टा बीत गया। फिर दूसरा घण्टा भी बीत गया। पिनोकियो बाहर ठण्ड में ठिठुरता रहा। दरवाज़ा खुला ही नहीं। उसने फिर आवाज़ लगानी शुरू की। इस बार तीसरी मंज़िल पर एक खिड़की खुली और उसी घोंघे ने झाँककर ऊँघती हुई आवाज़ में कहा, "अरे भाई लड़के, क्यों शोर मचा रहे हो! मैं आ तो रहा हूँ। मैंने तुम्हें पहले ही कहा था कि घोंघे किसी काम में जल्दी नहीं करते। मैं आ रहा हूँ!"

और फिर से खिड़की बन्द हो गई।

फिर दो घण्टे बीत गए। दरवाज़ा खुला ही नहीं। इस समय रात के दो बज रहे थे। चार घण्टे हो गए और घोंघा अभी नीचे नहीं उतरा। पिनोकियो को गुस्सा आ गया। उसने खींचकर एक लात दरवाज़े पर जमा दी। लेकिन यह क्या? उसकी लात दरवाज़े में घुस गई और वह इस तरह घुसी जैसे कोई कील लकड़ी के कुन्दे में ठोक दी गई हो। पिनोकियो ने बड़ी कोशिश की, लेकिन उसकी टाँग टस से मस नहीं हुई। वह इसी तरह एक टाँग के बल सवेरे तक खड़ा रहा। कुल नौ घण्टे बाद सवेरा होते-होते घोंघे ने दरवाज़ा खोला। पिनोकियो की यह दशा देखकर घोंघा खिलखिलाकर हँस पड़ा।

पिनोकियो को उसका हँसना बहुत बुरा लगा। लेकिन उसने बड़ी आजिज़ी से कहा, "घोंघा भाई, दरवाज़ा तो तुमने बहुत जल्दी खोला! लेकिन अब यह मेरी टाँग इसमें से निकलवा दो, या जाओ परी को ही बुला लाओ।

घोंघा बोला, "भाई, यह काम तो बढ़ई का है। वह या तो दरवाज़ा काट देगा या तुम्हारी टाँग काट देगा। लेकिन मैं बढ़ई नहीं हूँ। भला मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ! और जहाँ तक परी का सवाल है, वह सो रही है। उसे जगाया नहीं जा सकता।"

"खैर, तुम और कुछ नहीं कर सकते तो मेरे लिए कुछ खाने को तो ला दो। मुझे बहुत भूख लगी है।"

"हाँ, हाँ, अभी लाया।" घोंघा बोला।

करीब साढ़े तीन घण्टे बाद घोंघा उसके लिए चाँदी की तश्तरी में थोड़ा-सा नाश्ता लाया। देखने में नाश्ते की चीज़ें बड़ी खूबसूरत लग रही थीं। लेकिन जब उसने खाना शुरू किया तो उसे रुलाई छूट आई। रोटी पलस्टर की बनी थी और दूसरी चीज़ें दफ्ती और लकड़ी की। इन्हें सिर्फ देखा जा सकता था। ये खाने के लिए नहीं थीं। पिनोकियो मारे थकावट, भूख और गुस्से के बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो उसने अपने को एक पलंग पर आराम से लेटा हुआ पाया। परी उसके पास बैठी थी। वह बोली, "पिनोकियो, मैं इस बार भी तुम्हें क्षमा करती हूँ। लेकिन याद रखना, अगर तीसरी बार तुमने कहा नहीं माना और शरारत की तो ठीक नहीं होगा।"

उस दिन के बाद से पिनोकियो बहुत संभलकर रहने लगा। वह रोज़ स्कूल जाता था और एक भला लड़का बनने की कोशिश करता था। अन्त में एक दिन परी बोली, "कल तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी जाएगी। कल के बाद तुम कठपुतले नहीं रहोगे। तुम सचमुच लड़के बन जाओगे।"

यह सुनकर पिनोकियो खुशी से नाच उठा। कल उसके स्कूल के साथियों को इस खुशी में दावत देने को सोचा गया। कल का दिन उस कठपुतले के जीवन में सबसे अधिक खुशी का दिन होने वाला था! लेकिन...

8

पिनोकियो परी से पूछकर अपने दोस्तों को न्योता देने निकला। पिनोकियो अपने सभी दोस्तों को कल दावत पर आने के लिए कह आया। उसके दोस्तों में से रोमियो नाम का एक लड़का था, जिसे वह बहुत पसन्द करता था। उसे सब लोग सींकिया पहलवान कहकर पुकारते थे, क्योंकि वह बहुत ही दुबला-पतला था।

सींकिया पहलवान उस स्कूल का सबसे शरारती लड़का था। लेकिन पिनोकियो उसे बहुत चाहता था। पिनोकियो उसे न्योता देने के लिए चार बार उसके घर गया, लेकिन वह नहीं मिला। बहुत खोजने पर वह एक किसान की झोंपड़ी के पीछे छिपा हुआ मिला। पिनोकियो ने उसे पूछा, ''तुम यहाँ क्या कर रहे हो?''

''मैं रात होने का इन्तज़ार कर रहा हूँ। असल में मैं यहाँ से भागकर एक दूसरे देश जा रहा हूँ जो दुनिया का सबसे सुन्दर देश है। उसका नाम है, मूरख नगरी।''

पिनोकियो ने उसे कल अपने यहाँ दावत का न्योता दिया और यह भी बताया कि मैं कठपुतले से लड़का बनने जा रहा हूँ। लेकिन सींकिया पहलवान उसे समझाने लगा, ''अरे छोड़ो भी, तुम चलो मेरे

साथ! मूरख नगरी में न स्कूल है, न मास्टर, न किताबें। बस खूब खाओ और खेलो। वहाँ हर दिन छुट्टी रहती है। मैं तो भाई, वहीं जाऊँगा। तुम भी चलो। वहाँ हम लोग अकेले थोड़े ही रहेंगे। बहुत-से लड़के जा रहे हैं।''

पिनोकियो भी उसके साथ जाने को तैयार हो गया। थोड़ी ही देर में एक गाड़ी उधर आ निकली। उसमें बहुत-से लड़के बैठे थे। वे सब मूरख नगरी के यात्री थे। गाड़ी में कई रंग के बारह जोड़े गधे जुते थे। इन चौबीसों गधों ने अपने पैरों में मनुष्यों वाले जूते पहन रखे थे, इसलिए गाड़ी चलने पर बहुत कम आवाज़ होती थी। गाड़ी के पहियों पर भी टाट और चिथड़े लपेटे हुए थे। उस गाड़ी को जो कोचवान हाँक रहा था, वह कुछ अजीब सा प्राणी मालूम पड़ता था। वह जितना लम्बा था उससे ज़्यादा चौड़ा था। और उसका शरीर मक्खन की तरह पिलपिला था, लेकिन उसकी आवाज़ कुछ अजीब बिल्लियों जैसी थी।

गाड़ी जब पास आ गई तो सींकिया पहलवान ने उसे रोकने का इशारा किया। कोचवान ने मिमियाते हुए कहा, ''तो बेटे तुम भी हम लोगों के साथ मूरख नगरी जाना चाहते हो! लेकिन देखो न, गाड़ी में जगह ही नहीं है। कहाँ बैठोगे?''

''तुम फिकर न करो। मैं यहीं बैठ जाऊँगा।'' यह कहकर सींकिया पहलवान गाड़ी के पायदान पर ही बैठ गया। फिर कोचवान ने पिनोकियो को भी मूरख नगरी चलने के लिए कहा। पिनोकियो ने पहले तो काफी इन्कार किया और यह भी कहा कि परी नाराज़ होगी, लेकिन जब सबने मिलकर उसे समझाना शुरू किया तो वह राज़ी हो गया। कहीं जगह न पाकर पिनोकियो एक गधे पर बैठने के लिए तैयार हो गया। लेकिन वह जैसे ही उस पर सवार होने की कोशिश करने लगा कि गधे ने उसे एक लात मार दी। गाड़ी में बैठे हुए लड़के खिलखिलाकर हँस पड़े। लेकिन कोचवान नहीं हँसा। वह चुपचाप उस

गधे के पास आया और उसे चूमने के बहाने उसका आधा कान काट ले गया। इतने में मौका देखकर पिनोकियो गधे की पीठ पर सवार हो गया। लड़कों ने तालियाँ बजा कर उसे शाबाशी देनी शुरू की। इस बार भी गधे ने पिनोकियो को गिरा दिया। लेकिन जब कोचवान ने उसका दूसरा कान भी आधा काट लिया, तब पिनोकियो को गधे ने तंग नहीं किया। गाड़ी चल पड़ी।

कुछ देर बाद गाड़ी मूरख नगरी में जा पहुँची। यह अजीब-सा देश था। यहाँ सिर्फ लड़के रहते थे; आठ से लेकर चौदह साल की उमर तक के। शहर में बड़े-बूढ़े नाम लेने तक को नहीं थे। पूरे दिन सड़कों, गलियों और मकानों में हुल्लड़ होता रहता था। कोई किसी की नहीं सुनता था। वहाँ कोई मना करनेवाला था ही नहीं। जो जी में आए सो करो, गाओ-बजाओ, नाचो-कूदो। हँसो रोओ। बातें करो या मार-पीट करो। कोई रोकनेवाला नहीं। पिनोकियो ने देखा कि हर मोड़ पर लड़के खेल-कूद में मशगूल थे। कोई लकड़ी के घोड़े पर बैठकर उसे पीट रहा था, कोई हाथ के बल चल रहा था और कोई सड़क में आराम से लेटा हुआ गाने गा रहा था। दफ्ती के सिपाही पहरा दे रहे थे। लड़के ही उन्हें उठा-उठाकर इधर-उधर रख देते थे। शहर के मकानों पर तरह-तरह के नारे लिखे हुए थे। जैसे, 'खेलो-कूदो, मस्त रहो', 'खाओ-पीओ, मोज उड़ाओ', 'पढ़ाई-लिखाई मुर्दाबाद', 'हम गणित नहीं पढ़ेंगे', 'स्कूल जाना बन्द करो'।

पिनोकियो और सींकिया पहलवान और गाड़ी में आए हुए दूसरे लड़के मूरख नगरी में पहुँचते ही खेल-कूद में लग गए। कोई बिगुल बजाने लगा। कोई पहिया घुमाने लगा। किसी ने लट्टू नचाना शुरू किया और कोई ज़ोर-ज़ोर से चीखकर गाने लगा। देखते-देखते उनके ढेरों दोस्त हो गए।

इस नगरी में कब दिन बीतता था और कब रात बीतती थी,

खेल-कूद के आगे कुछ नहीं पता चलता था। धीरे-धीरे पाँच महीने बीत गए। अचानक एक दिन पिनोकियो बड़ी मुसीबत में फँस गया। उसने सुबह उठकर अपने सिर पर जो हाथ फेरा तो देखा कि उसके कान एक-एक हाथ लम्बे हो गए है। देखने में वे बिलकुल गधे के कान जैसे लगते थे। पिनोकियो को बड़ा दुःख हुआ। वह चीख-चीखकर रोने लगा। लेकिन उसकी तरफ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। अन्त में वह अपने लम्बे कानों को एक बड़ी-सी टोपी के नीचे छुपाकर अपने पुराने मित्र सींकिया पहलवान से मिलने चला।

जब वह उसके पास पहुँचा तो उसे देखकर आश्चर्य हुआ कि सींकिया पहलवान की हालत भी खराब थी। उसके घुटने में चोट आ गई थी। दोनों अपने-अपने दुःख से इतने दुःखी थे कि एक-दूसरे से गले मिलकर रोने लगे। लेकिन उनकी आवाज़ बिलकुल गधे जैसी थी। ऐसा लगता था जैसे दो गधे रेंक रहे हों। सींकिया पहलवान के भी कान पिनोकियो की तरह लम्बे हो गए थे। दोनों ने अपनी-अपनी टोपियाँ उतार दीं और एक-दूसरे की ओर देखकर रोने लगे।

इतने में किसी ने बाहर से दरवाज़ा खटखटाया और कहा, "जल्दी खोलो। जल्दी दरवाज़ा खोलो। मैं वही कोचवान हूँ। खोल दो, वरना ठीक नहीं होगा।"

इस पर भी जब दरवाजा नहीं खुला तो कोचवान उसे तोड़कर अन्दर घुस आया और हँसकर बोला, "लड़को, तुमने रेंककर बहुत अच्छा किया। इसीलिए तो मैं यहाँ चला आया।" यह कहकर वह उन दोनों की पीठ पर हाथ फेरने लगा। अब वे दोनों सचमुच गधे बन गए थे। कोचवान उन्हें बाज़ार में ले जाकर बेचने के लिए अच्छी तरह नहला-धुलाकर तैयार करने लगा। ग्राहक मिलने में देर न लगी। सींकिया पहलवान को एक किसान खरीद ले गया, क्योंकि उसका गधा कल मर गया था और पिनोकियो को एक सरकस वाला खरीद ले गया।

असल में वह कोचवान भी बहुत दुष्ट जादूगर था। वह इसी तरह दुनिया-भर के लड़कों को बहकाकर मूरख नगरी में लाता था और जब वे खेल-खेलकर गधे हो जाते थे तो उन्हें बेच देता था। इस तरह वह बहुत अमीर हो गया था।

सींकिया पहलवान का क्या हुआ, यह हमें अभी नहीं मालूम। लेकिन पिनोकियो के बारे में हम यह जानते हैं कि उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। सरकस का मालिक दिन-भर पिनोकियो को दूसरे जानवरों के साथ नचाता रहता था और शाम को दो मुट्ठी सूखी घास या भूसा खाने को देता था। एक बार जब पिनोकियो ने घास-भूसा खाने से इन्कार कर दिया तो उसे बड़ी मार पड़ी। उसके बाद से उसने चुपचाप घास खाना शुरू कर दिया। अब वह बार-बार पछताता था कि 'हाय, मैं कहाँ आ फँसा!' लेकिन अब धीरज धरने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। सरकस के मालिक ने किसी तरह ठोक-पीटकर पिनोकियो को कुछ करामातें सिखाईं। जब वह अच्छी तरह सीख गया तो एक दिन सरकस का ऐलान किया गया। शहर में जगह-जगह इश्तहार चिपकने लगे, जिनमें लोगों को दूसरे जानवरों के अलावा पिनोकियो नाम के एक गधे के करतब देखने के लिए आमन्त्रित किया गया था।

शाम को एक सजे सजाए तम्बू में खेल शुरू हुआ। उस दिन इतने लोग सरकस देखने आए थे कि उन सबको ठीक से बैठाना मुश्किल हो गया। एक इंच जगह खाली नहीं बची। पिनोकियो नाम के गधे का नाच देखने के लिए भीड़ उमड़ी चली आ रही थी। जब सब लोग बैठ गए तो सरकस के मालिक ने अपने खेलों की तारीफ में एक लम्बा भाषण दिया। इस समय उसने बहुत बढ़िया पोशाक पहन रखी थी। भाषण के बाद उसने पिनोकियो को सरकस के मैदान में निकाला। दर्शकों ने खुशी से चिल्लाना और तालियाँ बजाना शुरू किया।

पिनोकियो की सजधज इस समय देखने के काबिल थी। उस पर खूब बढ़िया ज़ीन कसी गई थी जिसमें सुनहरे सितारे जड़े थे। उसकी लगाम पालिश से खूब चमकाई गई थी। उसके खुरों को काले चमकीले रंग मे रँगा गया था, रंग-बिरंगे रिबन उसके पैरों में बँधे थे। सरकस के मालिक ने अब पिनोकियो की तारीफ में एक भाषण शुरू किया और काफी देर तक बोलने के बाद उसने पिनोकियो की ओर मुड़कर कहा,

"पिनोकियो, आज सरकस में तुम्हारा पहला दिन है। झुककर इन साहबान को सलाम करो!"

पिनोकियो ने अगले घुटने मोड़कर और सिर झुकाकर सबको सलाम किया। फिर उसके मालिक ने चाबुक फटकारकर उसे धीमी चाल से दौड़ने का हुक्म दिया। फिर उसे तेज़ चाल से दौड़ाया। उसके बाद बहुत ही तेज़ रफ्तार से। दर्शक लोग पिनोकियो की ओर देख रहे थे। इतने में मालिक ने एक पिस्तौल दागी, और फौरन पिनोकियो इस तरह ज़मीन पर गिर पड़ा जैसे उसे चोट आ गई हो और वह मर गया हो। वह अचानक उठ खड़ा हुआ। लोगों ने तालियाँ बजाकर उसे शाबाशी दी। पिनोकियो ने गर्दन उठाकर इधर-उधर देखा और अचानक एक जगह उसकी आँखें जम गईं। वहाँ एक बहुत ही सुन्दर स्त्री बैठी थी जिसके गले में सोने की सिकड़ी में एक तावीज़ लटक रहा था। उस पर कठपुतले का चित्र बना था।

"अरे, यह तो मेरी ही तस्वीर है। वह स्त्री मेरी बहिन परी ही है!" और वह खुशी से उछल पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से परी को पुकारने लगा। लेकिन लोगों ने समझा कि गधा खुश होकर रेंक रहा है। वे और ज़ोर से ताली बजाने लगे। वहाँ हुल्लड़-सा मच गया। पिनोकियो के मालिक को उसकी यह हरकत पसन्द नहीं आई। उसने चाबुक की मूठ से पिनोकियो की नाक पर बहुत ज़ोर से चोट की। बेचारा गधा चोट से तड़प उठा और जीभ निकालकर चाटने लगा। लेकिन फिर भी उसका दर्द कम नहीं हुआ। उसे यह देखकर और भी दुःख हुआ कि परी अब अपनी जगह से हटकर न मालूम कहाँ चली गई थी। उसकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन इसे किसी ने नहीं देखा। उसके मालिक ने कोड़ा फटकारा और उसे एक पहिए में से कूदने का हुक्म दिया। पिनोकियो पहिए में से कूद तो गया लेकिन ऐसा करते समय उसका एक पैर उसमें अटक गया और वह ज़मीन पर आ गिरा और उसके

पैर में मोच आ गई।

सरकस खत्म हो गया। उसका मालिक बोला, "लंगड़े गधे को रखकर मैं क्या करूँगा। चलो, इसे बेच आऊँ।"

वह उसे बेचने के लिए बाज़ार में ले गया। उसे वह दो रुपये में बेचना चाहता था। लेकिन कोई भी उसे खरीदने को तैयार नहीं हुआ। अन्त में एक ढोली मिला। वह सिर्फ पचास पैसे देने को तैयार था। उसने कहा, "जानते हो, इसे मैं क्यों खरीद रहा हूँ। मैं इसके चमड़े का ढोल बनाऊँगा। पचास पैसे में यह मेरे लिए महँगा नहीं है।

पिनोकियो ने जब यह सुना तो वह मारे डर के थर-थर काँपने लगा। उसने चीख-चीखकर दया की भीख माँगना शुरू किया। लेकिन भला एक गधे की बोली कौन समझता! ढोली उसे डण्डे से पीटता हुआ समुद्र की ओर ले चला। किनारे पर पहुँचकर उसने उसके गले में एक बड़ा-सा पत्थर बाँध दिया। फिर एक रस्सी में बाँधकर उसने उसे पानी में डुबो दिया। गले में बँधे हुए पत्थर के वज़न से पिनोकियो पानी के ऊपर न आ सका। ढोली रस्सी का दूसरा सिरा पकड़कर किनारे पर बैठ गया उसने सोचा—जब गधा डूबकर मर जाएगा तो मैं इसकी खाल उतार लूँगा।

करीब एक घण्टे तक पिनोकियो पानी में डूबा रहा। ढोली ने सोचा कि अब तो वह मर ही गया होगा। वह ज़ोर लगाकर उसे बाहर खींचने लगा। सर्र से रस्सी ऊपर खिंच आई। यह क्या? इसमें तो गधे की जगह एक ज़िन्दा कठपुतला बँधा हुआ था, और अपने हाथ-पैर फेंक रहा था। ढोली को पहले तो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ और आश्चर्य से उसका मुँह खुला रहा गया। वह बोला, "कौन है रे तू? मेरा गधा कहाँ गया? मैंने उसे रस्सी में बाँधकर डुबा रखा था।"

"मैं ही वह गधा हूँ!" पिनोकियो हँसकर बोला।

"तुम?"

“हाँ, हाँ, मैं!”

“अरे कठपुतले! मैं बहुत बुरा आदमी हूँ। मुझे गुस्सा आ जाएगा तो मैं तेरी गर्दन मरोड़ दूँगा। मेरा गधा कहाँ है? बता।”

“बताया न भाई! मैं ही हूँ वह गधा। तुम मुझे पहले बाहर निकालो और मेरे गले से रस्सी खोलो, तभी मैं तुम्हें सारा क़िस्सा बताऊँगा।”

ढोली ने उसे बाहर खींच लिया और कहा, “जल्दी बताओ। यह क्या माजरा है? मैंने उस गधे को पचास पैसे में खरीदा था, पूरे पचास पैसे में! मैं उसका ढोल बनानेवाला था।”

“सुनो तो, मैं पहले कठपुतला ही था। मैंने अपनी परी बहिन का कहना नहीं माना और पढ़ने में मन लगाने की बजाय मैं खेल-कूद में ज़िन्दगी बिताने के लिए मूरख नगरी में चला आया था। कुछ दिनों में मैं गधा बन गया। अब तुमने जब गधे के रूप में मारने के लिए पानी में लटकाया और पानी में मछलियों की भीड़ मेरे पीछे लग गई। उन्होंने मेरा गधे का रूप खा डाला और मैं फिर से कठपुतला बन गया। बताओ, इसमें मेरा क्या कुसूर है?”

ढोली गुस्से से पैर पटककर बोला, “हाँ, हाँ, तुम्हारा कुसूर क्यों होने लगा! मेरे पचास पैसे तो पानी में गए। तुम क्या समझते हो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा। मैं तुम्हें लकड़ी के भाव बेचकर अपने पैसे निकाल लूँगा।”

“अरे ढोली चाचा, जाओ, अपना काम देखो। तुम मुझे क्या बेचोगे।” पिनोकियो बोला। ढोली उसे पकड़ने के लिए दौड़ा। लेकिन पिनोकियो खिलखिलाकर हँस पड़ा और दूसरे ही क्षण पानी में कूद गया। वह समुद्र में तैरते हुए आगे बढ़ने लगा। कुछ दूर जाने पर उसने पीछे घूमकर देखा तो उसके प्राण सूख गए। एक भारी कुत्ता-मछली अपना मुँह फाड़े हुए उसका पीछा कर रही थी। मारे डर के पिनोकियो के हाथ-पैर फूल गए। वह जल्दी-जल्दी तैरने लगा। लेकिन उसके हाथों

ने जैसे जवाब दे दिया। वह एक गज़ आगे बढ़ता था तो मछली दस गज़। थोड़ी ही देर में मछली पिनोकियो के पास आ गई। उसने एक ही साँस में बहुत-से पानी के साथ पिनोकियो को अपने मुँह में खींच लिया। पानी उसने बाहर निकाल दिया और पिनोकियो को गले से नीचे उतार लिया। धम्म से पिनोकियो मछली के पेट में जा गिरा। दूसरे ही क्षण वह बेहोश हो गया।

कुछ देर बाद जब उसे होश आया तो उसने अपने को एक अजीब दुनिया में पाया। मछली के पेट में चारों तरफ घना अँधेरा फैला हुआ था और ज़ोर-ज़ोर से हवा के झपट्टे आ रहे थे। ये मछली के फेफड़े से आते थे। पहले तो पिनोकियो ने कुछ हिम्मत बाँधी। लेकिन फिर वह घबरा गया और रोते-रोते चीखने लगा, “बचाओ! बचाओ! मैं मुसीबत में फँस गया हूँ। कोई मदद करो!”

“अरे पगले, यहाँ तुम्हें बचाने कौन आएगा?” एक छोटी मछली अपने मधुर स्वर में बोली। वह भी पिनोकियो के साथ मछली के पेट में चली आई थी। “तुम कौन-सी मछली हो, यह तो बताओ।”

“मैं मछली नहीं, कठपुतला हूँ।”

“फिर तुम इस मछली के पेट में कैसे चले आए? अब यहाँ से निकलना मुश्किल है। मछली हमें पचा लेगी और इस तरह हम खत्म हो जाएँगे।”

“लेकिन मैं तो इसके पेट में नहीं मरना चाहता। मैं यहाँ से भागना चाहता हूँ!” पिनोकियो बोला, अचानक उसने देखा कि थोड़ा आगे कुछ चमक रहा है। वह उसी प्रकाश की ओर बढ़ चला।

जैसे-जैसे पिनोकियो आगे बढ़ता जाता था, रोशनी भी साफ होती जाती थी। आगे बढ़ने पर जो कुछ उसने देखा, उससे वह दंग रह गया। मछली के पेट में ये सब चीज़ें कैसे आईं? वहाँ एक टेबल लगी हुई थी जिस पर मोमबत्ती जल रही थी और पास ही एक बूढ़ा आदमी बैठा

था। वह चबा-चबाकर ज़िन्दा मछलियाँ खा रहा था। यह देखकर पिनोकियो कुछ देर तो भ्रम में पड़ गया कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा है। लेकिन जब उसने उस बूढ़े आदमी को गौर से देखा तो उसके मुँह से खुशी की एक चीख निकल गई। वह दौड़कर उस आदमी के गले से लिपट गया और बोला, "पापा, पापा, आखिर मैंने तुम्हें ढूँढ ही निकाला। अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।"

"पिनोकियो! तुम यहाँ कैसे? कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ? आह, मेरे बेटे!"

पिनोकियो ने उसे शुरू से लेकर अब तक का पूरा क़िस्सा कह सुनाया। अन्त में उसने बताया कि किस तरह वह गधा बना और फिर किस तरह ढोली से बचकर इस मछली के पेट में आ गिरा। इसके बाद उसके पापा, जेपेत्तो ने उसे अपना क़िस्सा बताया, "जब मेरी नाव उस दिन लहरों पर थपेड़े खा रही थी तो मैंने तुम्हें किनारे पर खड़ा देखकर पहचान लिया था। मैंने नाव किनारे लगाने की बड़ी कोशिश की, लेकिन तूफान बहुत तेज़ था। जब मेरी नाव डूब गई तो इस मछली ने मुझे निगल लिया। लेकिन साथ ही एक और अजीब बात हुई। उस तूफान में फँसकर एक व्यापारी जहाज़ भी डूब गया। मछली से उसके सारे मल्लाह तो बच गए लेकिन मछली ने वह पूरा जहाज़ निगल लिया। उस जहाज़ में खाने-पीने का सामान खूब भरा था। जब जहाज़ इसके पेट में पहुँचा तो मुझे तो बड़ी खुशी हुई। उसमें शराब की बोतलें, बिस्कुट, चीनी, चाय, काफी, सूखे मेवे वगैरह सब भरे हुए थे। इन्हीं चीज़ों के बल पर मैं दो साल से इस मछली के पेट में रह रहा हूँ। लेकिन अब सब कुछ खत्म हो गया है। सिर्फ यही एक मोमबत्ती बची है जो थोड़ी देर में खत्म हो जाएगी। इसके बाद हमें अँधेरे में रहना पड़ेगा।"

"नहीं, पापा, अँधेरे में मेरा जी घबराता है। चलो, यहाँ से भाग चलें। तुमको तैरना आता नहीं है। लेकिन मैं तो लकड़ी का बना हूँ

इसलिए खूब तैर लेता हूँ। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाना। इस तरह समुद्र पार कर लेंगे।" पिनोकियो बोला।

"अरे बेटा, यह सब बेकार है। यहाँ से बचकर निकलना मुश्किल है।"

"नहीं, नहीं पापा, तुम चलो तो, लाओ बत्ती मुझे दो।" यह कहकर पिनोकियो मोमबत्ती हाथ में लेकर चल पड़ा। जेपेत्तो भी

बड़बड़ाता हुआ उसके पीछे हो लिया। मछली के गले के पास पहुँचकर वे दोनों रुक गए। मछली अब बूढ़ी होने को आई थी। इसलिए अक्सर मुँह खोलकर सोती थी। जब उसने मुँह खोला तो पिनोकिया को बाहर तारों-भरा आसमान और चाँदनी छिटकी हुई दिखाई दी। वह बोला, ''पापा, यही मौका है, चलो जल्दी करो! बस, इसके मुँह से निकलने-भर की देर है। फिर तो हम आसानी से पार लग जाएँगे।''

दोनों धीरे-धीरे दबे पाँव मछली के गले को पार करके उसके मुँह में जा पहुँचे। उसके दाँत क्या थे, जैसे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ खड़े हों। बीच में लम्बी-चौड़ी सड़क की तरह उसकी जीभ थी। दोनों जीभ पर दौड़ते हुए उसके मुँह से बाहर निकल आए। अपने पापा को पीठ पर बिठाकर पिनोकियो पानी में कूद पड़ा, और जल्दी-जल्दी तैरने लगा। मछली सोती ही रही। उसे कुछ पता नहीं चला।

9

पिनोकियो जल्दी-जल्दी तैर रहा था। अचानक उसे लगा कि उसका पापा उसके कन्धे पकड़कर काँप रहा है। बूढ़ा शायद घबराकर काँप रहा था या उसे जुकाम हो आया था। पिनोकियो को कुछ चिन्ता हुई। वह बोला, ''पापा! ज़रा हिम्मत से काम लो। अभी किनारे पहुँचते हैं।''

लेकिन उसका पापा घबराता ही रहा। थोड़ी देर में पिनोकियो बहुत थक गया और डूबने लगा। वह बोला, ''पापा, पापा, अब बचना मुश्किल है! मैं डूब रहा हूँ।''

लेकिन तभी पीछे से किसी ने मधुर आवाज़ में पूछा, ''आंय,

कौन डूब रहा है?''

''मैं पिनोकियो और मेरे पापा! लेकिन तुम कौन हो?''

''मैं? मैं वही मछली हूँ जो तुम्हारे साथ कुत्ता-मछली के पेट में बन्द थी। मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे भाग आई। तुम थक गए हो न? आओ, मेरी पूँछ पकड़ लो। में अभी तुम्हें किनारे पहुँचाती हूँ।'' पिनोकियो ने उसकी पूँछ पकड़ ली। थोड़ी ही देर में मछली ने दोनों को किनारे पहुँचा दिया। किनारे पहुँचकर पिनोकियो ने मछली को धन्यवाद देते हुए उसका सिर चूम लिया। मछली की आँखों में आँसू आ गए, लेकिन वह उसके सामने आँसू नहीं बहाना चाहती थी। इसलिए फौरन डुबकी मारकर पानी में गायब हो गई।

अब सवेरा होने ही वाला था। पूरब में लाली फैल रही थी। पिनोकियो अपने पापा को सहारा देकर आगे बढ़ा। रास्ते में उन्हें दो भिखारिनें मिली। एक लोमड़ी और दूसरी बिल्ली। वह दुष्ट बिल्ली अंधी बनने का बहाना करते-करते अब सचमुच अंधी बन गई थी और लोमड़ी भी सचमुच लंगड़ी हो गई थी। अब वे किसी को धोखा नहीं दे पाती थीं और न उन्हें कोई भीख ही देता था। उनकी हालत बड़ी खराब थी। यहाँ तक कि एक बार तो लोमड़ी को खाना खरीदने के लिए अपनी पूँछ तक काटकर बेच देनी पड़ी। पिनोकियो को देखकर लोमड़ी बोली, ''पिनोकियो, पिनोकियो! भैया, अंधी और लँगड़ी पर कुछ दया करो!''

''हाँ, कुछ दया करो!'' बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो ने उन्हें डाँटकर कहा, ''दूर रहो, पाखण्डी कहीं की! आगे से कभी मेरे रास्ते में न आना! तुम दोनों को मैं खूब पहचानता हूँ।''

''हाय, पिनोकियो भैया! अभागिनों पर कुछ दया तो करो।'' लोमड़ी घिघियाकर बोली और अपनी कटी हुई पूँछ हिलाने लगी।

''हाँ, अभागिनों पर कुछ तो दया करो।'' बिल्ली ने आँसू बहाते

हुए दोहराया।

"चुप रहो, वह कहावत याद करो—चोरी का माल ज़िन्दगी-भर नहीं चलता। तुम लोग ज़िन्दगी-भर चोरी करती रही हो, अब भूखों मरो!" पिनोकियो यह कहकर अपने पापा के साथ आगे बढ़ गया। आगे चलने पर उन्हें एक छोटी-सी झोंपड़ी मिली। पिनोकियो ने दरवाज़ा खटखटाकर कहा, "अन्दर कौन है? हम बाप-बेटे को कोई शरण दो, हम लोग मुसीबत के मारे हैं!"

"अन्दर चले आओ!" भीतर से किसीकी महीन आवाज़ आई।

दोनों अन्दर चले गए। पिनोकियो ने देखा कि अन्दर वही बातूनी झींगुर बैठा था। पिनोकियो ने खुश होकर कहा, "अरे, तुम रहते हो, यहाँ, झींगुर भैया!"

"हाँ, पिनोकियो! याद है तुम्हें, हथौड़ी से मुझे तुमने ही मारा था। लेकिन जाओ, मैं बुराई का बदला बुराई से नहीं चुकाता। मुझे तुम दोनों पर दया आ रही है। तुम चाहो तो यहाँ रह सकते हो। क्योंकि कल ही मुझे नीली आँखों वाली परी ने यह झोंपड़ी रहने के लिए दी है।"

"परी? कहाँ है वह? कब आएगी?" पिनोकियो ने उत्सुकता से पूछा, "वह मेरी परी है। मेरी परी बहिन है। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।" यह कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन झींगुर कुछ नहीं बोला। पिनोकियो अपने बीमार पापा को पास की एक चटाई पर लिटाकर बाहर निकला। वह माली के पास पहुँचा और बोला, "माली भाई, मुझे एक गिलास दूध दे दो। मेरे पापा की तबीयत ठीक नहीं है।"

माली बोला, "ऐसे तो मैं तुम्हें एक बूँद दूध नहीं दूँगा। लेकिन अगर तुम मेरा खेत सींचने के लिए सौ बाल्टी पानी निकाल दो तो मैं तुम्हें एक गिलास दूध दे सकता हूँ। पहले मेरा गधा पानी भरा करता

था। लेकिन अब वह मर रहा है।"

"क्या मैं तुम्हारे गधे को देख सकता हूँ?" पिनोकियो ने कुछ सोचकर कहा।

"हाँ, हाँ, आओ देख लो।" यह कहकर माली उसे अन्दर ले गया। पिनोकियो गधे को देखकर फौरन पहचान गया। यह उसका वही पुराना साथी सींकिया पहलवान था जो पढ़ाई छोड़कर उसके साथ मूरख नगरी जाने के लिए भाग आया था। दोनों साथ-साथ ही गधे के रूप में बाज़ार में बिके थे। लेकिन अब वह थोड़ी ही देर का मेहमान था।

पिनोकियो ने माली का काम पूरा कर दिया। माली ने उसे एक गिलास ताज़ा दूध दिया। झोंपड़ी में लौटकर पिनोकियो ने अपने पापा को दूध पिला दिया। अब पिनोकियो खाली समय में टोकरियाँ बनाता था और बाज़ार में उन्हें बेचकर दो-चार पैसे कमा लेता था। वह एक अच्छे लड़के की तरह बहुत कायदे से रहता था और खूब काम करता था। धीरे-धीरे उसने इतने पैसे इकट्ठे कर लिए कि एक दिन वह अपने पापा से बोला, "पापा, मैं पास के बाज़ार में जाकर अपने लिए एक नया कोट, टोपी और जूते खरीदना चाहता हूँ। जब मैं उन्हें पहनकर लौटूँगा, तो मुझे देखकर समझोगे कि जैसे कोई साहब आ गया है।" और पिनोकियो चल पड़ा।

रास्ते में उसे वही घोंघा मिला, जो एक बार परी के यहाँ नौकर था। पिनोकियो ने उससे परी का पता पूछा। घोंघा अपनी उसी ऊँघती हुई आवाज़ से धीरे-धीरे बोला, "ओह, पिनोकियो परी तो बेचारी आजकल बीमार है और अस्पताल में पड़ी है। वह आजकल इतनी परेशान है कि खाना तक नहीं जुटा पाती।"

यह सुनकर पिनोकियो को बड़ा दुःख हुआ। वह बोला, "हाय, परी इतनी मुसीबत में है। लो, तुम ये मेरे रुपये ले जाओ। मैं तो इनसे जूता-टोपी खरीदने जा रहा था। लेकिन मैं बाद में इन चीज़ों को खरीद

लूँगा। परी ने मेरी बड़ी मदद की है। मेरे पास और रुपये होते तो मैं इस समय तुम्हें सब दे देता। जाओ, मेरी तरफ से परी की खूब सेवा करना। मैं भी परी को देखने जाना चाहता हूँ। लेकिन क्या करूँ, मेरे पापा बीमार हैं।''

वैसे तो घोंघा बड़ा आलसी था। लेकिन इस बार वह पैसे लेकर बहुत तेज़ी से भाग निकला। उस दिन पिनोकियो रात में ज़्यादा देर तक काम करता रहा। उसने आठ के बजाय सोलह टोकरियाँ बनाईं। इन्हें वह सवेरे बेचने के लिए ले जानेवाला था। करीब आधी रात तक काम करने के बाद वह सो गया।

रात में उसने सपने में देखा कि वह सुन्दर परी मुस्कराती हुई आई और उसका माथा चूमकर बोली, ''शाबाश पिनोकियो मैं तुमसे बहुत खुश हूँ और तुम्हारी पुरानी गलतियों को क्षमा करती हूँ। जो लड़के अपने माता-पिता की सेवा करते हैं उनकी सारी गलतियों को क्षमा कर दिया जाता है। मुझे आशा है, तुम आगे भी इसी तरह अच्छे-अच्छे काम करोगे और कायदे से रहोगे। अच्छा, मैं जाती हूँ, सुखी रहो।''

अचानक पिनोकियो की नींद खुल गई। उसे इस सपने पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था, लेकिन सबसे बड़ा आश्चर्य तो उसे तब हुआ जब उसने यह देखा कि अब वह कठपुतला नहीं रहा, बल्कि सचमुच का लड़का बन गया है—बिलकुल दूसरे लड़कों की तरह।

उसने आस-पास नज़र दौड़ाकर देखा तो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। झोंपड़ी की घास-फूस की दीवारें गायब हो चुकी थीं। वह एक छोटे-से कमरे में था। घास की चटाई की जगह वह एक मुलायम बिस्तर पर बैठा था। वह उछलकर खड़ा हो गया। उसके सिरहाने एक छोटी-सी मेज़ पर उसके नए कपड़े रखे थे, नई टोपी और चमड़े के खूबसूरत नए-नए जूते भी रखे थे।

उसने कपड़े और जूते पहन लिए। फिर जैसे ही उसने अपनी

जेब में हाथ डाला कि उसे एक छोटी-सी हाथी-दाँत की डिब्बी मिली जिस पर लिखा था, ''अपने प्यारे छोटे भाई पिनोकियो को, उसकी परी बहन की ओर से।'' डिब्बी में चालीस सोने की मोहरें चमक रही थीं। ये मोहरें उसे उन्हीं पैसों के बदले में मिली थीं जो उसने परी की दवा के लिए घोंघे को दे दिए थे।

पिनोकियो जाकर शीशे के सामने खड़ा हो गया। वह अपने को पहचान नहीं पा रहा था। कहाँ तो वह लकड़ी का एक भोंडा-सा पुतला

था और कहाँ अब एक सुन्दर और समझदार लड़का बन गया था, जो नए-नए कपड़े और जूते पहने खड़ा था।

"और मेरे पापा कहाँ हैं, ज़रा चलूँ उन्हें भी तो देखूँ।" वह दौड़ता हुआ दूसरे कमरे में गया। वहाँ बूढ़ा जेपेत्तो बड़े मज़े में बैठा अपना काम कर रहा था। उसने अपना वही पुराना, लकड़ी के खिलौने बनाने का काम शुरू कर दिया था।

पिनोकियो दौड़कर अपने बूढ़े पापा के गले से लिपट गया, और बोला, "पापा, यह सब कैसे हो गया? सब कुछ कैसे बदल गया?"

"यह सब तुम्हारे ही कारण हुआ है बेटे, तुमने ही किया है।" जेपेत्तो बोला।

"मैंने किया है?"

"हाँ, और क्या! जब खराब बच्चे अपने गलत कामों पर पछताते हैं और फिर नए सिरे से अच्छे बनने की कोशिश करते हैं तो उनका घर इसी तरह हँसी-ख़ुशी से भर जाता है।"

"और पापा, वह लकड़ी का पिनोकियो कहाँ गया?"

"वह यह रहा!" जेपेत्तो ने लकड़ी के एक बड़े-से पुतले की ओर इशारा करते हुए कहा। पुतला कुर्सी से टिका खड़ा था। उसका सिर एक तरफ लटक आया था। उसके दोनों हाथ अजीब तरह से झूल रहे थे और उसके पैर टेढ़े हो गए थे। उसे देखकर हँसी आती थी।

पिनोकियो कुछ देर उसे देखता रहा और फिर एक समझदार लड़के की तरह बोला, "पापा, जब मैं कठपुतला था तो कैसा भद्दा लगता था। अब मैं कितना खुश हूँ और एक अच्छा लड़का बन गया हूँ।"

●●●

 मुद्रक : लक्ष्मी प्रिंटइंडिया दिल्ली-32 फोन : 22133474

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी ताबीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

ISBN 81-7483-055-3
9788174830555

शिक्षा भारती